गायेन जस देखेन

सियाराम मिश्र

नवनीत प्रकाशन
23 हीवेट रोड, इलाहाबाद

सस्करण
प्रथम, १९९४

मूल्य : ५०-०० रुपया

प्रकाशक
नवनीत प्रकाशन
२३, हीवेट रोड
इलाहाबाद

मुद्रक
वैशालिको प्रिन्टर्स
८८३/७ दरियाबाद, पुलिस चौकी
इलाहाबाद

GHAYN JASH DEKHAN
By : Shiyaram Mishra
Prise F fty Rupees On y



नवनीत प्रकाशन, २३ हिवेट रोड, इलाहाबाद

कवि की कलम से

मेरा जन्म गोला गोकर्ण नाथ के निकट ग्राम घरघनियाँ में सन् १९४२ ई० में हुआ था। यह अवधी भाषा का क्षेत्र है! किन्तु यहाँ की अवधी पर कन्नौजी का कुछ प्रभाव परिलक्षित होता है। हमारे घरों मे कन्नौजी मिश्रित अवधी बोली जाती है। काव्य-यात्रा में मुझे यह लगा कि अपनी बोली में जितनी महज अभिव्यक्ति हो सकती है उतनी खडी बोली मे नहीं। व्यक्ति को विशेष रूप से कवि को हृदय की बात कह लेने में सन्तोष का अनुभव होता है। मेरी यह मान्यता है, यदि व्यक्ति हृदय से सरल नही है, उसका बाहर भीतर एक नहीं है तो वह चाहे विद्वान, धनवान या नेता अधिकारी भले ही हो जाय किन्तु कवि नहीं हो सकता। सहज अभिव्यक्ति के लोभ में ही अवधी मे कविताएँ लिखी हैं।

गाँव प्रदेश तथा देश की राजनीतिक, सामाजिक गतिविधियों ने कवि को प्रभावित किया। प्रत्येक क्षेत्र मे जो कुछ भी देखा परखा उसे व्यक्त करने का टूटा-फूटा प्रयास ही यह संकलन है। विविध विषयों से युक्त, जब इस संकलन की पाण्डुलिपि तैयार हुई तो शीर्षक की तलाश हुई। सर्व प्रथम धर्मपत्नी श्रीमती विजय लक्ष्मी मिश्र के सामने चर्चा हुई तो उन्होंने साँचु कहइया दाढ़ी जार' शीर्षक रखने का सुझाव दिया। कुछ दिनों के उपरान्त अग्रज डॉ० मोहन अवस्थी से भेंट होने पर उन्होंने कहा यह शीर्षक साहित्यिक कविताओं को समाहित करने में असमर्थ है। अत: पर्याप्त मंथन के पश्चात् "गायेन जस देखेन" को अन्तिम रूप दे दिया गया।

संकलन की पाण्डुलिपि अपने अग्रज डॉ० श्याम सुन्दर मिश्र को दिखाई, उन्होने कहीं-कहीं पर कन्नौजी के प्रभाव पर आपत्ति की। पुन: अवलोकन किया गया और जहाँ तक संभव हो सका कन्नौजी से प्रभावित शब्दों को बदलने का प्रयास किया गया। फिर भी यदि कहीं पर कन्नौजी का प्रभाव दृष्टिगत हो तो इसको क्षेत्रीय संस्कार के रूप में ही स्वीकार किया जाना चाहिये। जनपद के अवधी के सिद्ध कवि स्व० बंशीधर जी

शुक्ल का प्रभाव मेरी कविता पर कहीं-कही पड़ा है अत कवि श्री शुक्ल का ऋणी है।

मैंने अपनी सभी पुस्तकों की भूमिकाओं में यह स्वीकार किया है कि मैं कभी अध्ययनशील नही रहा और कविता के पास पड़ोस से भी निकल सका हूं, इसमें सन्देह है। जो कुछ भी बन पड़ा है वह माँ का प्रसाद ही है। हाँ, यह बात अवश्य है कि मुझे कविता के ब्याज श्री विष्णु कुमार त्रिपाठी 'राकेश' जैसे अग्रज तथा डॉ० आनन्द मंगल बाजपेयी जैसे विद्वान मित्र के रूप मे प्राप्त हुये।

श्रद्धेय डॉ० नामवर सिंह, डॉ० सूर्य प्रसाद जी दीक्षित, डॉ० उमा शंकर शुक्ल, डॉ० देवेन्द्र मिश्र, डॉ० डी० एस० मलिक, डॉ० मुन्नू लाल पुरवार के प्रोत्साहन ने भी मुझे विशेष बल प्रदान किया है। नगर के रोटरी क्लब तथा व्यापार मण्डल के पदाधिकारियों का भी कवि ऋणी है। साथ ही साहित्यानंद परिषद के साथियों विशेष कर सन्त कुमार बाजपेयी 'सन्त' श्री कान्त तिवारी 'कान्त' डॉ० के० बी० त्रिपाठी 'राही' के सहयोग का आभार मानता है।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन के प्रधान मंत्री आदरणीय श्रीधर जी शास्त्री, कविवर श्री राजेश दीक्षित ने भी मुझे विशेष रूप से प्रोत्साहित किया है, कवि उनके प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता है। अन्त मे स्मृति शेष पं० राजाराम मिश्र तथा बाबू अनन्त राम पुरवार के मार्ग दर्शन ने मुझे जो सबल प्रदान किया कवि आभार व्यक्त करने की औपचारिकता से उनके योगदान को हल्का नहीं बनाना चाहता, मेरे परम मित्र स्व० श्री बालकृष्ण त्रिपाठी के पुत्रगण संगम प्रकाशन के स्वामी त्रिपाठी बन्धुओं का विशेष ऋण है, जिन्होंने पुस्तक को जन-जन तक पहुँचाने का दायित्व अपने ऊपर लिया।

मैंने पूर्व में कहा है कि यह संकलन मन की अनुभूतियों का सहज चित्रण है, अतः किसी को कोई आघात लगे तो बालक की तोतली वाणी मानकर मात्र कविता का आनन्द लेते हुये कवि को क्षमा करेंगे। सर्वेभवन्तु सुखिनः।

जय मानव

सियाराम मिश्र

मंगला देवी मन्दिर गोला/गोकर्णनाथ
जनपद-खीरी (उ० प्र०) २६२८०२

अनुक्रम

छाँड़ि तुमइँ न सहारा कोई	६
उपजाऊ करि दै मुँह बदरा	११
हम कलाकार हन भारत कँ	१२
धरम हई नेतन का हथियार	१४
अइसे मास्टर का नमस्कार	१५
चेतु रे भारत केर किसान	१६
यहै दुखन दुबरे हन	१७
आँगन का घाम	१८
भगवान देस चलाइ रहा	१९
धरम के खातिर तुम इन्सान बनो	२१
देस के प्रानन मा उतरउ	२२
हम बसन्त के फूल बनी	२३
दिया टिमटिमाई लाग	२४
गणतंत्र पिआरो प्रानन ते	२५
सागर देखेन	२६
बूढ़े बिरिछ तुमँइ पहिचानेन	२७
बरखा	२८
चन्दा मामा	२९
बोलावति हमैं	३१
बिन पईसा ज्ञानी उल्लू हइ	३२
दोहे	३४
का करिहैं चिरई चुनगा	३६
ईमानदारी कइसे निभई	३७
चील्ह भोज	३९
हिम कै बिटिया	४१
जब आवा दौस देबारी कँ	४२

अखण्ड रामाइनि	४४
आवा परधानी का चुनाव	४५
गाँवन कै नेता	४८
गँवई गाँवन केर मंजूर	४९
कस्बा का रेक्शा वाला	५०
अब कै किसान की दुनियाँ	५१
कारीगर	५२
हिन्दी के टीचर	५२
गाँवन के छैल चिकनियाँ	५३
जई मास्टर अँगरेजी क्ययार	५४
बिआई गाँव कै लरिकी का	५५
तितुली आई	५७
बरखा रानी	५८
तीसरि सारित गड़ुआ ह्वोई	६०
मीरा बनी	६२
शहराती विद्यार्थी	६३
नई रोशनी के दस्तूर	६४
मरी चकबन्दी भई	६५
मुशायरा	६६
दोहे	६८
कुण्डलियाँ	७२
रोला	७३
कुण्डलियाँ	७३
रोला	७४
कुण्डलियाँ	७४
कवि सम्मेलन	७५
जइ ग्वाला सब इनते मात	७८
ओ ओटर भईया	७९
डाकुन की बनि आई	८०
देहाती बात	८१
दोहे	८३
गरीबी न पापर बेलइ	८४
नींद कहूं कंकरीली जमीन पै	८५

यहि त कबहूँ न लडिअउ भूलि	८६
भुँइ माता	८८
जइ कृषी समर कै जोधा	८९
अइसे बना आधुनिक नेता	९१
मास्टर हुइगे	९४
फुलमतिया का दिन भरि काम	९६
कवि की कलम न अब लिखि पइहै	९८
लड़ै जाति से जाति	१००
उत्तर प्रदेश के जइ मन्दिर	१०१
चलँइ चप्पल विधान सभा मा—धन्नि कुर्सी महरानो	१०४
कुरसी काल भई	१०६
सब गावै एकता गीत	१०८
अब कै किसान	११०
पहिचानी गई	११३
दोहे	११४
हुइ जाइ पूत डिपटी तुम्हार	११५
हिन्दी दिल हइ अउ मुरदा हइ	११८
दोहे	१२०
आवउ मिलि जुलि निरमान करी	१२१
वहै देसु हम पावै	१२२
दोहे	१२४
भूतनाथ का मेला	१२५
वहै देसु हम पावै	१२७

छाँड़ि तुमँइ न सहारा कोऊ

ध्यान धरौं कछु अइसोइ मातु,
कि दूसर कौनेंउ ध्यान न आवै।
अइसी करौ किरपा ममतामयी,
जो जड़ता जग ते विनसावै।
मइया तुमँइ नहिं देर लगै,
छिन मा जुग कै बिगरी बनि जावै।
कानि करौ कछु अम्ब न पूतु,
कपूत बनै तुमका लजवावै।

जो न मिली ममता अबकी,
तुमरे समुहें अब रोइब नाहीं।
ठाढी रहौ चहै पानी लिहे,
तुमरे कहे ते मुँह धोइब नाहीं।
भूँखइ पेट खेलौनन खेलत,
कौनिउ आस सँजोइब नाहीं।
देहौ न जो नरता बनिबा पवि,
भूलि हूँ मानुष होइब नाहीं।

छाँड़ि तुमँइ न सहारा कोऊ,
मन मा जहु आठ घरी अब आवइ।
गाढ़े को साथी बनी अब कौनु,
जो मइया न पूतु को साथ निभावइ।
तौनी तना रहिबा जग मा हम,
जौनी तना हमैं मइया बसावइ।
का कबहूँ जहु संभव हइ,
रिरिकइ लारिका महतारी न धावइ।

आगि के गेह ते आगि कै भीख,
मुला बयसन्दर नाम धरइहैं।
कौन भला जलु हइ जेहिमा,
चलि बारिधि बीच पियास बुझइहैं।
चाहे बढ़ै जुगनूं केतनो,
रवि कै समुहे न कबौं टिकि पइहैं।
पाइकै अच्छर दुइ तुमते,
तुमरे गुन छन्दन मा कवि गइहैं।

लाज बचाइबे खातिर जो,
डग दुइ धरिकै चली आइहौ मइया।
साँचु हइ पूतु कपूतु भवा,
तुम काहे कुमाता कहाइहौ मइया।
हइ बिसवासु हमैं भरपूर,
न बाँह हमारी छोड़ाइहौ मइया।
सूरज हइ सबका एकसे,
अँधियारे म ज्योति देखाइहौ मइया।

उपजाऊ करि दै भुँइ बदरा

सुख का करै अकासु बरसु रे
सामबेद हुइ कंठ सरसु रे
कवौं न बुढ़िया होइ जवानी
बनी रहइ जह बोली बानी
घट-घट मा भरि-भरि दे अमिरत
हरे रहँइ हाथन कै गजरा
उपजाऊ करि दै भुँइ बदरा।

घूँघट मा चितौनि ना बूड़इ
कौनउँ ना किसान का मूँड़इ
हूक न होइ निआउ की छाती
बिन सनेह ना टूटइ बाती
रस रस चुअइ पियारु नयन ते
जुग जुग जिअँइ घरन मा नखरा
उपजाऊ करि दै भुँइ बदरा।

रहइ हौसिला आस न टूटइ
गाडी धीरज केरि न छूटइ
जल-थल नेह बँसुरिया बाजै
गेहूँ लिहे देवारी राजै
भारत कै कीरति नित बाढ़ै
रहइ सुकालु परै ना पटरा
उपजाऊ करि दै भुँइ बदरा।

●

हम कलाकार हन भारत के

जीवन कै बदलेन धार हुँकारि
निज प्रानन का उतसर्ग कियेन
कठिनाई केर पहाड़न पर
फहराइ धुजा हँसि खेलि जियेन
मानेन न साँच मा आँच कवौ
दिढ़ कलम चलायेन औ' भोंकेन
जिउ ते पियार भारत कै बदि
आपन सुख भट्ठी मा झोंकेन।

जब जाति-धरम पर बनि आई
जब करिया धन्धा ललकारिनि
चन्दन ते पावन माटी पर
जब रिपु तिरछी निगाह डारिनि
तब हमरी कलम मसाल लिहे
पानी मा आगि लगाइ दिहिसि
जो बाघ नींद मा रहँइ परे
उनका हुड़बगि जगाइ दिहिसि।

जब मोहु भवा हिम्मति हारेन
तउ गीता सुन्दर दिहिसि ज्ञान
झट समर भूमि मा कूदि परेन
सब मरइ जिअइ का छाँड़ि ध्यान
जगि परेन चन्दबरदाई मा
बनिकै भूषण आगे आयेन
बिसमिल ऊधमसिंह राजगुरु
हुइ भगत क्रान्ति कै गुन गायेन।

भिजई विलार न बनेन कबौ
प्रन पालेन नित स्वच्छन्द रहेन
परबत कै छाती वज्र फोरि
जग देखि चुका अनबरत बहेन
हम कवि हन भारत कै सपूत
पतझर का नव मधुमास दिहेन
घुट्टी मुर्दा आदर्शन कै—
हइ मॉचु न कबहूँ भूलि पियेन।

गरदन कटि गइ मुल रुकेन नही
अंगार कविता ते झारेन
हन युग-बानी कै आराधक—
लड़तइ मरिगेन मरतइ मारेन
जब अनुशासन कै टिकटी मा
शासन कै लासि देखाइ परी
फुकिगा निआउ का जब इजन
बेइमानी झंडी दिहिसि हरी।

फूलन कै बदले मन्दिर मा
जब करिया काँटे गडै लाग
घट मा अमरित के फनु काढ़े
गोरे भुजंग जब बढ़ै लाग
राक्षसी काम की क्षुधा लिहे
नोचिनि पुहुपन का जब भौंरा
तउ कवि आपन सन्देसु दिहिन
भूला भारत कुतिया मौंरा।



धरम हइ नेतन का हथियार

दुनियाँ भरि के मन्दिर महजिद
कब छॅड़िहैं गुरुद्वारा जह जिद
मठाधीश बेंचँइ ईसुर का
फैलाबँइ ब्योपार
धरम हइ नेतन का हथियार।
रहेन रेल की दुइ पटरिन अस
कहेन मुला प्रेमइ ते सरबस
सब व्वाटन वदि पीटँइ ढफली
कुरसी की तकरार
धरम हइ नेतन का हथियार।
जेहिका देखउ परेसान हइ
पॉउ थके मुँह बियाबान हइ
जुलुम सहति सब उमिरि भिजारेन
झूँठइ हन हकदार
धरम हइ नेतन का हथियार।
मेहनति की जह नाव न बूड़इ
गैलल का मोटकवा न मूँड़इ
धरती नभ बनि गोइया गावै
सरगु बनैं संसार
धरम हइ नेतन का हथियार।
बनँइ न घर जह जेल हमारे
मन ते मानुष होइँ न हारे
एक धरम जह दुनिया मानै
वजइ प्रेम को तार
धरम हइ नेतन का हथियार।

अइसे मास्टर का नमस्कार

सिच्छा अस अदिमी की पूँजी जेहिका ना चोर चोराइ सका
खर्चे ते बाढ़ै नित्त और ज्ञानिन का को भटकाइ सका
मानेन स्वतंत्रता पायेन हम, हुइ गेन स्वतंत्र फिरि कटकटाइ
यूनियन बनायेन दिढ अपनिउ निकसेन सड़कन पर बजबजाइ।

अस गगन-फार, बकवाधि किहेन नारन कै दफ्ती लिहे हाथ
लरिका किरिला देखिनि हमरी लइ नवा जोग हुइ लिहे साथ
सोचेन हमहूँ नौकरी बनइ चीनी जूता अस फौलादी
यहि सासालीदी मा कब लौ पिसिहै मेहरारू औलादी।

कलजुग कै ढाल संगठन हइ हाकिम हरहा ना छेड़ि सकइ
साथइ हर साल नतीजा कै दइ नोटिस नाँहि खदेड़ि सकइ
रुपिया को पायेन महामंत्र शासन ना अब दुरिआइ सकइ
हम चहै जो करी हन स्वतंत्र परवत का कौन हलाइ सकइ।

परबन्ध कमेटी हइ हमार ना ओहिका कुछ अधिकार रहा
सरकार बनो बेतन दाता चोरइ हुइ पहरेदार रहा।
अनुशासन सब हुइगा त्रिशंकु हम आपनि मौजइ मार रहे
अब हुकुम अइस लागँइ हमका जइसे रद्दी अखबार रहे।

फैसन दुनिया कै देखि देखि हम अदबदाइ भेन दीवाने
तोरेन अइयासी को रिकार्ट करतब अपनायेन मनमाने
पहिले टिउशन मा मेहनति करि निपटेन कुछ दिन महँगाई ते
अब तौ बिरकुल जिउ भाजि गवा हइ लागति हमैं पढाई ते।

सब छाँड़ि पढाई दुनिया की हर गतिविधि ते मतलब हुइगा
हम हुइगेन गुण्डन कै गुण्डा ना शिष्टाचार रंच छुइगा
कुछ पालेन लरिका सड़कछाप सँझलौखे बोतल खोलइ का
फिर बकइ लगेन हम अन्ट-सन्ट केहिकी हिम्मति अब बोलइ का।

गराम मिश्र गायेन जस देखेन

ठेका लइ लइ फिरि लरिकन का झूठे नम्बर दइ फि
लरिकउ लइ डिगरी रहे चाटि बनि गयी नौकरी
सब चरै भेजि आदर्शन का बसि गोटी की देखें
हइ गयेन गुनन ते बहुत दूरि रहि गयेन पियक्कड़ निग

अब रोउ रहेन सम्मानु मिलइ हुन गुरु देस कै
हमका नितारि कहि रहे लोग अइसे मास्टर का नम

चेतु रे भारत केर किसान

कटवाइनि सब तोहरेइ खेत
ऊन निकासिनि मांगिनि बेत
महल रहे मुसकाइ देखि कै
सब दिन तोहरइ मूख परान
चेतु रे भारत केर किसान

नेता तिकड़म लाल भँजाइनि
ऊँच मचान बैठि हुरिआइनि
नोटिकइ गानि बैलवा जोतिनि
क्षुधा बाँटि खाइनि पकवान
चेतु रे भारत केर किसान

धरम बताइनि रारि कराइनि
मन्दिर मसजिद मा भरमाइनि
स्वारथ कै अस खुंडी खोलिनि
नदी करिसि आपन जल पान
चेतु रे भारत केरि किसान

सियाराम मिश्र

गायेन

लिखा किताबन मा जन तंत्र
सबद सबद मुल हँइ परतंत्र
श्रम कै देउता तड़पै बिलखै
काहिल हँइ श्रीमान—।
      चेलु रे भारत केर किसान।

●

यहै दुखन दुबरे हन

हम बसि यहै दुखन दुबरे हन
फेरि न लौटि गवा सुखु अइहै।

अपनी धुन मा दादुर बोलँइ
झींगुर जीवन मा रस घोलँइ
पलकन मा उबसति लइ सपने
      जानैं कब सरिता उफनइहै
      फेरि न लौटि गवा सुख अइहै।

बरखा मा बाजार मँझायेन
घूप छाँह मा खेलि गँवायेन
मान मनौती किहे न पायेन
      पंथु जहाँ का मनु लँगड़इहै।
      फेरि न लौटि गवा सुख अइहै।

बेलि चढ़ै बिरवन के ऊपर
चातक गढ़ै कथा नित भू पर
नई लिहे परतीति पिकी कब
      जुग बदि नवा संदेसा लइहै
      फेरि न लौटि गवा सुख अइहै।

बिजुरी बूँदन की अइ घोटँइ
भूधर ढोबँइ हिम की बोटँइ
मौसम-जाल फँसी गौरैया
कब निरमल नभ उडि उडि पइहै
फेरि न लौटि गवा सुख अइहै।

●

आँगन का घाम

फुफकारै आँगन के घाम
भट्ठी की लपट भई साँस
सूखि सूखि गन्ना भे बाँस।
सब करेजु तालन का फाट
बिरिछ लगँइ ठूँठ अस उचाट।
लुअँइ करिनि पथ की गति जाम
पौरुष भा शील कै बेराम॥

कमरन मा बन्द दोर बूप
पनघट मुँह बाइ भे अरूप।
परदेसी सहि न सके ताप
बैठि रहे छवि गृह चुपचाप।
कसमसान खेतन मा काम
सबद गये खोलि ख्वास आम॥

सड़क भई अगिया बैताल
खूँटा का तोरि भजा काल
सुखी भयें राधा कै श्याम
लटकन की छाँह कै गुलाम।
पसरि रहे बिसरे जो नाम
हफि रहे जन मन कै राम॥

●

भगवानइ देस चलाइ रहा

भीतरै भीतर जल कै पाइप सीवर कै पाइप से मिलि गइ
घर की टोंटी से मल निकला गउमुखि गन्दिगी से हिलि गइ ।
जब आगे थोरी दूरि चलेन औरउ बिकासु कुछ देखि परा
कूरा के ढेर लगवाइ रहे कुछ नौनिहाल कचरा बटुरा ॥

सीवर के गड्ढा मा गिरि कै मनई देखेन चिल्लाइ रहे
समुहे दुइ कौड़ी कै जोगी सब भूत भविष्य बताइ रहे ।
होटल मा गयेन खाइ खातिर तब आइ गये लकदक बैरा
बोले बाबू जी का खइहउ ना चाउ छिया नम्बू खैरा ॥

दस बीस किसिम के भोजन उइ छिन भितर मौहि गिनाइ गये
पानी पियाज मिरचा सलाद बिन कहे तुरन्त सजाइ गये
जो अन समुहे हम माँगि रहेन अस लगा कि उइ सिमिटाइ गये
जइसे कउनउ बिजुरी मारिसि बैरन ते तनि खिसिआइ गये ।

बकरा कै बोटी के बोंगे मुरिगन के टंगुरी देखि परी
हाथन मा उनके कौर रहा मुखि गगन सब भूख हरी
तुरतइ छी छी करि बाहेर भेन होटल का देखि लियेन ब्याला
बच्चन का मांसु बिकाइ लगा अब गयी नई किरिया आना ।

एकन ते बोलेन ओ बहिनी उइ बोले तुमका दइ गारी
हम बाप अहिन येहि लरिका कै तुम कस समुझे ही महतारी ।
तब देखेन एक पगलिया का सब कपड़ा मड़ुर को बाँधि लिहिसि
देखतइ हमका उँखियान पेटु भागी पाँवन ते नाचि दिहिसि ॥

जंगली जानवर ई मानुस कुछ अन्ट सन्ट बोलइ लागी
मनमा सोचेन फटिगा बादर, मनवा नई सोचइ लागी ।
ऊपर कोठी आराम करइं नीचे नालिन पर बइठे नर
कुछ काटैं दिन फुटपाथन पर कुछ आपन मंह ओलैडटे नर ॥

बाहेर हँइ पौडर क्रीम मल भीतर कोइला कै खान लिहे
जइ महानगर के रहवैया साँपन की जीभ पुरान लिहे
हँइ बडे बडे जन बूडि गये इन मटमइले व्योपारन म
जो पक्के छिनरा रहँइ नौन डोली के संग कहारन मा।

जरि गयेन देह का बिकनि सुनेन ऊँचे कोठन पर खुले आम
होटलन मा कालगर्ल बनिकै नारी भारत की करँइ नाम।
कुछ मिले कि जिनका कामु यहै अफसर मंत्रिन के ढिग आवँइ
बड सिरसिकार परिवारन ते लरिकिनी पटावँइ पहुँचावँइ ॥

ज्यादातर का गन्तव्य मिला रुपिया पइसा अउ रोटी हइ
दुनिया बाहेर ते सुघर बडी मुल भीतर बहुतै खोटी हइ।
कहुँ सट्टा का व्योपार मिला कहुँ बानन का बाजार मिला
ना पायेन किरन सरलता के चौतरफा ते अँधियार मिला ॥

जइ थाने जिनकी कोठरिन मा चीखइ मरिकै हुइ गयीं बन्द
राक्षसी काम के भूखन मा नुचि गये फूल लुटि गे मरन्द।
नाली के होती पर अटकी झोपडी एक फिरि देखि परी
बतइ सुनिकै दुइ लरिकन की अफसोस भवा अउ गाज गिरी ॥

लरिका बोला, बप्पा बप्पा अब कब कौनउ घर मा मरिहै
तबहें भोजन बढ़िया मिलिहै जब कौनउ सेठि दया करिहै।
जब मझिले चचुआ मरे रहँइ मिठलोने व्यंजन दिहिसि रहइ
ओहिकै बदले दुइ चार दउस बेगारि अकडि कै लिहिसि रहइ ॥

चिमनिन का घुसि कै धुआँ पिअँइ हँइ आपनि हड्डी कूटि रहे
बाँइ जपरे थपरे टूँगँइ ठाढे औसरवादी सुख लूटि रहे।
कवि कै सामर्थ नहीं येतनी भीतर का बाहर लइ आवइ
[illegible] कै पाछे की लीला को कहइ और केहि विधि गावइ ॥

[illegible] मा [illegible] गइ कनूल भगव,नइ देस चलाइ रहा
[illegible] बचि रहा उनहि की कसमैं खाइ रहा।
[illegible] जनता मा [illegible] भारत के साख गँवाइ रहे
ई नेता कुर्सी कै खातिर हँइ धमकच्चर मचिआइ रहे ॥

सियाराम मिश्र

पायेन जस दे

धरम के खातिर तुम इन्सान बनौ

बनी रहइ जह धग शान्ति की फुलवारी हौ चाहति जो
बनी रहइ भारत की धरती महनारी हौ चाहति जो
गाँवन केरी थकनि बटोरे जिअँइ परान अगर चाहौ
बजइ गीत मुरली के सुर मा हे श्रीमान अगर चाहौ
गीत गजल दोनउ मा निखरउ
नर हुइ ना शैतान बनौ।

देखि चुके हौ अस्त्र-शस्त्र तुम ढेर लगें पूजा धरमा
प्रतिमा ते बढ़िके महन्त हुँइ नौकर बने विश्वकरमा
आये दिन नीलाम होति ईमान देखि डारेउ तुमहें
बिकति रोज भगवान देखिके नीति साखि तारेउ तुमहें।
अगर न चाहौ उजरै बगिया
तुम भुँइ का बरदान बनौ।

काँटे बनिहैं फूल अगर दिल मा रहि जइहै रंच नमी
हियाँ न हिमा कबौं प्रेम के दरपन पर बनि धूरि जमी
मस्ती के मत जहाँ हुआँ आँधी अइहै तउ थमि जइहै
जीवन की सौगाति पाइकै मूरख मानुष रमि जइहै
चाहौ जो न कटइ निज सूरज
नेहौ हिन्दुस्तान बनौ।

भेद भाउ हुइ हियाँ न कोनउ एकइ साँझ बिहान हियाँ
एक बाप के सब लरिका हुँइ एकइ हुइ भगवान हियाँ
पिअइ जो चहै सुधा प्रेम की जह जगती भिनसार की हइ
छाँड़ि दिहिसि अभिमान जौन जन धारा तेहि करतार की हइ।
चाहति हौ जो स रग सुधो
बाँटउ जोति महान बनौ।

जानै कौन सिन्धु कै जौंरे छिन मा जीवन बहि जइहै
कौनौ टीसन ट्रेन साँस की बिना निमंत्रन रहि जइहै
बिना बताये सहज बोलता यहि मकान ते छूटि जइहै
बैभव लिहे रूप को राही कौन राह मा लुटि जइहै।
बुनौ न कबहूँ यहि ते उलझन
परहित कै प्रतिमान बनौ।

●

देस के प्रानन मा उतरउ

तुम झरना अस झरउ
देस कै प्रानन मा उतरउ।
गंध लुटावउ हृदय बसैं जो
बाँटउ आपनि हँसी हसैं जो
चम्पा अस देही कै भीतर
रहि रहि तुम निखरउ
देस कै प्रानन मा उतरउ।

उड़इ पराग गाँव गल्ली मा
ज्योति मलउ कल्ली-कल्ली मा
मानुष जीवन मिला जिअइ बदि
अमरा मौत मरउ
देस कै प्रानन मा उतरउ।

आँगन केर अकास तुम्हारो
मधुर चाँदनी रास तुम्हारो
किरच किरच करि गहन अँधेरो
बुनउ सबेर- बुनउ
देस कै प्रानन मा उतरउ

आपनि बोली मा रसु घोरउ
भुँइ पर रहउ नखत ना तोरउ
पथरन ते निचुरउ गंगा अस
निरभय हुइ बिचरउ
देस कै प्रानन मा उतरउ।



हम बसन्त के फूल बनी

जीवन केरि नई परिभाषा
मुँहबोला मौसम बाँटै
गन्ध सनी जह हवा नित्त
चिन्ता कै रूखन का काटै
नहीं नेह कै बिरवा उखरै
नदी बनी हम फूल बनी

दुलराइति काँटे पलकन ते
जिअइ न मूल जगत्त उर मा
सपने मा न पीर खटकावै
बजै गीत नूतन सुरमा
नई फसल अस नित मन बाढ़ै
भूलि न कबहुँ बबूल बनी

जब बिनास कै छाती चढ़ि कै
नाचैं सिरजनहार नये
कारि कोइलिया रागु निकासै
चिट्ठी बाँचै भोर भये
बलि को पन्थु जौन नर नापैं
उन पाँवन की धूल बनी।



दिया टिमटिमाइ लाग

कुर्सी कै हवा लगे दिया टिमटिमाइ लाग
परबत अस मनु मानौ धूरि मा बिलाइ गा
स्वारथ की भीर लगी साँचु जनु घिनाइ गा
बोला भइ जीभ अपन
सबद गिड़गिड़ाइ लाग।

देउना परसादु पाइ अपनै सब खाइ गवा
अकड़ि-अकड़ि चलइ बयार मौसम फिरि आइ गवा
बादन का कुंभकरन
जगि कै मुसुआइ लाग।
दीमक भइ राजनीति गीता के पन्नन पर
बातन के फूल झरइं सीत मा घोटन्नन पर
रूप देखि रावन को
दरपन भिभिआइ लाग।
कुर्सी कौ हवा लगे
दिया टिमटिमाइ लाग॥

गणतंत्र पिआरो प्रानन ते

नित नई महाभारत देखउ गणतंत्र दौस की बेला मा
बसि पढ़उ पहाड़ा ब्वाटन का कुर्सी के ठेलम ठेला मा।
जिनके गरजन ते फटा गगन उइ नारा कनौ बिलाइ गये
जो रहँइ छकाउति भुँइ हमारि उइ बादर सूम उड़ाइ गये ॥

तब रहँइ दहाड़ति बाघ अइस शोषण अउ भ्रष्टाचार देखि
डरभुते लगँइ उइ पहुँचि हुआ करिया परवत अँधियार देखि।
जो सत्ता लड़ि झड़ि कै पायेन झूठें सुधार मा धँसि न जाइ
चौरइ जो कौनउ लहरि लगी गहिरे दल-दल मा फँसि न जाइ ॥

यहि डर ते भइया जौन होइ बोलिबा ना कुर्सी बची रहइ
आतंकवाद और रिसवत की पाँवन मा मेंहदी दी रची रहइ।
कहुँ मँहगाई मुँह बाइ रही कहुँ जलम भूमि का झगड़ा हइ
सब लौटि पौटि हुअनँइ ठाढे जो गाल बजावइ तगड़ा हइ ॥

पजाब केरि किरिला दुनी चौगुनी रात दिन होति जाति
हम खाली गाभिन बातन मा अटके हन जोरें कुछ जमाति
मुर्दा तउ सब एकसै देखान बसि बदलि-बदलि कफनु आवँइ
जब मौत ठाँढि समुहे ताकइ तउ करँइ खुशामदि मुँह बावँइ।

सागर की बातैं कौनु करै ओथले पानी मा बूड़ि रहे
झडा रंगु चाहै जौन होइ सब मिलि जनता का मूड़ि रहे
हइ जौन देस मा भेदु नहीं हत्या मा अउ कुरबानी मा
सच्चाई जहाँ लुकाइ रहइ आतंकवाद कै बानी मा।

कवि माँगि रहा है कमते कम बलिदान करौ बदनाम न अब
गणतंत्र पिआरो प्रानन ते हँसि खेलि कौर नीलाम न अब।



सागर देखेन

आजु रस भरा सागर देखेन

बनि अकास लहरइ जो हिय मा
चाह कि निन्त रहइ जहु जिय मा
नाचति नटवर नागर देखेन
आजु रस भरा सागर देखेन ।

तट ते चलेन नाउ मुल भूलेन
लहरन की बाहन मा झूलेन
अग जग रूप उजागर देखेन
आजु रस भरा सागर देखेन ।

जबहि थमा तनिकउ कोलाहल
बँधे काल तीनउँ एकइ पल
घुटुअन चलत छपाकर देखेन
आजु रस भरा सागर देखेन ।

कलप बिरछ कै मिली गाछ जब
बहि गइ मन की पूछ ताछ सब
मुखर मौन कै आखर देखेन
आजु रस भरा सागर देखेन ।



बूढ़े बिरिछ तुमँइ पहिचानेन

गये बिलाइ हिये कै जंगल
छूटि परे खग नसा अमंगल
यहु जीवन छिन जियना मानेन
बूढे बिरिछ तुमँइ पहिचानेन।

उडि-उडि आपन पंख पसारेन
कइ अभिमान अकास भिंजारेन
निज करतूति समुझि हठु ठानेन
बूढे बिरिछ तुमँइ पिहचानेन।

सबदिन दिहेउ सहारा तुमहें
नाउ-कूल-मझधारा तुमहें
तुमरोइ जगत पसारा जानेन
बूढ़े बिरिछ तुमँइ पहिचाने।

बाहेर भीतर एकइ दुनियाँ
भयेन पुलकि साँचउ निरगुनियाँ
बाघ-गुफा यहु तन अनुमानेन
बूढ़े बिरिछ तुमँइ पहिचानेन।

सूखि गयेउ अब ना हरिअइहौ
औसर पाइन फिरि धरि खइहौ
छाड़उ पिन्डु बहुत अकुतानेन
बूढ़े बिरिछ तुमँइ पहिचानेन।





बरखा

बरखा रितुअन कै रानी हइ

बरसाइनि पूजा अस पावनि
राखो अस अतिशय मन भावनि
नीके दिन केर बोलउआ जस
जइ साँचु बेद कै बानी हइ
बरखा रितुअन कै रानी हइ।

मोरन कै पाँवन ते नाचै
वदरन ते ममता का बाँचै
धानी अति गाढ़ि चुनरिया मा
लहराइ रही भरि पानी हइ
बरखा रितुअन कै रानी हइ।

चुलबुली काम कै सपन तरी
रसकै मूरति तनि कसक भरी
धरती की थकनि पलोटि रही
लरिकन कै मीठि कहानी हइ
बरखा रितुअन कै रानी हइ।



चन्दा मामा

तुम महतारी कै भाई कइसे तुमका दुरिआई
मुल तुमका आइ नपेदिक तउ कइसे नेहु लगाई।
रोगन ते कौन निभाइमि यहि जग मा नातेदारी
नीके कै गाहक सब हँइ दुनिया कुरूप दुखियारी॥

जब पहिले पहिले देखेन तउ सपना जइसे आयेउ
अनजाने मा मन भायेउ फिरि रहि रहि रसु बरसायेउ।
तुम घटइ लगेउ पल छिन मा घटि घटि कै अन्त बिलायेउ
हमरे चिन्ता तब जागी दुविधा मा चित्तु फँसायेउ॥

चचुआ हकीम ते पूछेन जइ कइसे हुइगे मामा
सिरकिट्टी हुइ कै छिपिगे आपन समेटि पइजामा।
बोले हकीम जइ रोगी हइ इनँइ तपेदिक भारी
इनका जग तहूँ न छाँडइ जानइ मरिहै महतारी॥

अबहूँ अकास मा आवँइ तउ आपन रूप देखावँइ
लइकै कनियाँ मा हमका मामा कै कथा सुनावँइ।
कहुँ कहँइ थार, सोने का कहुँ अमिरत भरा पियाला
चाँदनी तुम्हारी माँई जइ हँइ बप्पा कै साला॥

तारन मा नाचु देखावैं जब ताकँइ कोकावलियाँ
जइ मामा हँइ मनमौजी मुसकाइ करँइ रंगरेलियाँ।
माँई हँइ भोली भाली अस नटखट दुलहा पाइनि
या भारत कै कन्या का देउता मिलि खूब ठगाइनि॥

अम्मा बोली पतिबरता चाँदनी तुम्हारी माँइ
जो पति कै साथ लटी हँइ अउ साथइ मा हरिअहाईं।
जइ जनम जनम के जोडी मंगलि मा जीहइ मरिहैं
दोनउ का बिधना बोरिहै दोनउ का मंघट तरिहै।।

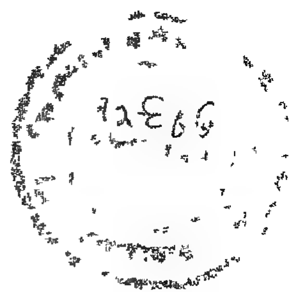
इइ प्रेम जगत का स्वामी जेहिकी नर थाह न पावैं
यह सबते बडी दवाई जो यहिका गरे लगावै।
कुछ बाँधे ज्ञान गठरिया सो बहँइ रात्र चन्दा मा
पाथर अउ गडहा पाइनि आपन खोजी धन्धा मा।।

तुम कहेउ कि दूध बतासा जइ मामा लइकै अइहैं
मुल का गड़हन ते मइया। अब जइ गइया उपजइहैं।
जो सूतु बैठि के कातइ बुढिया मामा के छाती
जहु जाइ कहाँ सब कपडा ना कौनउ संग पँधाती।।

नौकरी करँइ सब प्रभु की सब समुझाइसि महतारी
बस एक नचावनहारा जग नाच रहा दइ तारी।
सब सूतु इकट्ठा कइके भगवान गोदाम बनावैं
जब होंइँ दुरपदी नगी उनका चीरा पहुँचावैं।।

मामा बेराम बनि बनि कै यू दुनियाँ समझावै
जइ दुख कै दिन ना रहिहै जो सुख के न रहि पावैं।
चाँदनी काम की तपि कै अग जग का भोज बनावै
लइ जरी मौन कै बटुली जीवन का हाथ छोडावै।।

करिया सफेद कै जोड़ा करि कै यहु काल बिभाजन
यहि लुका छिपी की बिधि ते जगदीश्वर कै आराधन।।



बोलावति हमैं

न जानै कौन बोलावति हमै
धोवाई चादरि जइसी राति
दून रवि कै जुगनू हुलसाति।
ओस मा देहीं भिजये पात
करइ अउरउ बयारि कुछ घात।
गमकि बेला बहकावति हमैं
न जानैं कौन बोलावति हमैं ।।

रहे छपरन मा सपने सोइ
पाँउ मा काँटि खोबरे बोइ।
थकनि मा काम मचावै रारि
नवोढा बिहँसै मन का मारि।
नींद ते कौन जगावति हमैं
न जानैं कौन बोलावति हमैं ।।

साँस कै आवा जाही बढ़ै
सिमिटि सन्नाटा मूडे़ चढ़ै।
कमल मा हुइगे भौंरा बन्द
एक झींगुर गावै बसि छंद।
अकेले ससि भटकावति हमैं
न जानैं कौन बोलावति हमैं।

जइस खडहर या बिजुरी होइ
रहो झुरिन का सिरजन ढोइ।
राह निसुसै मंजिल की बाह
होइ जस लोभ जस कै छाँह
टपकि महुआ सनकावति हमै
न जानैं कौन बोलावति हमैं ।।



सियाराम मिश्र

बिन पइसा ज्ञानी उल्लू हइ

हिरनाकुस कै अस कथा आइ अभिमान रहइ जेहि की पूँजी
ईसुर ते बढ़ि कै मानि रहा कइ पकर कौन नेहि की दूजी
हइ हुकुम बड़ा भगवानेउ ते मन मा जेहि के त्रिभुवनु जमा
सनकारिसि जेहिका चला तौन रोकिसि दुमिन करि बहै थमा

मद पिता सुतन ते कहइ लाग व्यभिचार करउ व्यभिचार करउ
जेहि की बदि धरती पर आयेउ ना मुखिया पर अगार धरउ।
सच्चाई की फुलवारी मा अधरम की आगि लगाइ देउ
जो बचा खुचा पावौ निआउ उनपानु सकेलि भगाइ देउ।

पूँछी को ज्ञान तुमारो जह बिन पइसा ज्ञानी उल्लू हइ
यहि जग मा साँची धरमिन बदि बूड़इ का जल दुइ चुल्लू हइ।
तुमरे भोवना कै खातिर जो कौनउ लरिकी बाम्हें अइहैं
जो पइहैं तुमका धरमपाल तउ हाथ मींजि कै पछितइहैं॥

बप्पा बोले लरिकउना ते छाँड़उ जह साँची राह पूत
बेइमाना चोरी राहजनी हइ कौनउ नहीं गुनाह पूत।
वह गुरू कहाँ? जो पिटा नहीं ना ठगि कै किहिसि कमाई हइ
कलयुग मा मंतर यहै फला जेहिकी लाठी वहु साईं हइ॥

जो यहि विधि ना गड़बड़ करिहौ नेता ना कबहूँ बनि पइहौ
आपन प्रभाउ ते साँचु लिहे यसि निबुआ चाटनि रहि जइहौ।
कुछ तत्त मिले बनिगा मानुष ना कौनउ सिरजन हार हियाँ
जो करिहै ना हेरा फेरी वहु पइहै ना भिनसार हियाँ॥

अब धरउ किनारे मेहनति का हउ वैद तुरन्त दया छाँड़उ
हउ व्योपारी तउ शोषण कै गड़हा मा सब मजूर गाड़उ।
जो अधिकारी तउ फाइल मा बंधक कइ राखौ राजि पाटि
जो दुकनदार काँकर गबडउ बिन कसम खाउ अउ देउ घाटि॥

| सियाराम मिश्र

मायेन जस दे



जो सग मग जुग धारा कै आदश छाड़ि तुम बहिहौ ना
विपरीत हवा मा हपिफ डफिफ दुइ पल से फादिल रहिहौ ना।
जो चाहि रहे हौ रैन चैन छलु छाँड़ि सुदामा बनौ नहीं
भूखे नंगे तपसी त्यागी या गइया श्यामा बनौ नही ॥

महतारी बोली ओ बिटिया तुम चुनउ अइस वर मानभावा
जो रिसवति ते भरि कै जेबैंह मॅझलौखे लौटि घरइ आवा।
हिरनाकुस के जुग मा मंत्री सपने मा बड बड़ बोलि रहा
कलजुग की किरिला औ किताब मानौ रहि रहि कै खोलि रहा ॥

राजा मन्त्रिन की मिच्छा हइ ओ परजा जन लूटउ फूँकउ
जह है जीवन का चढी पारि लुटि जइहै दुनियाँ ना चूकउ।
खुद तउ भौंरा अस बने फिरउ मेहरार, साता अस चाहउ
देखउ ना अपन चरित्तर का औरन की करनी का थाहउ ॥

हइ सुरझी भई पहेली जह बहिगारि मढँउ मुल पोल रहउ
जो गाल नजावइ बहु ज्ञानी आपनि पीटनि तुम ढोल रहउ।
हिन्दी की करउ बकालत मुल चाहौ लरिका अँगरेज बनँइ
अँगरेजी शासन के समान बनि कै अकास बसि यहै तनँइ ॥

सरुआ हँइ भये फेफड़ा सब सपना मंत्री का पूर भवा
हइ भेड भई मिगरी जनता बसि शोषण का दस्तूर भवा।
धीरे धीरे यह अंधकार सँदल प्रकाश का नापि लिहिसि
सावन भादौ के बादर अस पूरे अकास का झाँपि लिहिसि ॥



दोहे

आगन आगन भैंस मा सुखी दुष्ट औ सन्त
गोबर कै कीड़ा दुखी पाइ परोस बसन्त।

खूँटा बाँधो भैंसि अस राजनीति कै हाल
दूसर चौपाया निरखि भड़कि उठै ततकाल।

आक्टोपस कै छुअनि अस दुष्ट मिताई जान
मानुष मृग कै हेतु जस आग्नेटक को गान।

हर कलजुग मा नर बहै सबल सजग दीर्घायु
मुदित भवा हइ पिअति जो बेसर्मी की वायु।

सबद सबद सब जरि गये आँखी काढ़िसि मौन
पूछइ उत्तर देइ को समाधान हइ कौन।

ना भुजंग हइ कै डसउ मुल न तजउ फुफकार
परम हंस का छाँडि हइ यहु जग का व्योहार।

करिया कौइँचा कूबरा आपन रूप अगार
मुल दरपन सबका करै एकसै अंगीकार।

दोसरेन का दुरिआइ कै निज मुँह रहे बनाइ
औरन का बिगरै नही आपन मुँह बनि जाइ।

जो खिरकी कै काम हइ कविताई को काम
गहिथल मेढका कूप को लखति व्योम अभिराम।

बहिरे कै चौपारि जह, हइ बौरा की बानि
कहासुनो को करि सकै मरम प्रेम को जानि।

जो चाहौ प्रभु कै कृपा तौ शिशु बनौ अदान
महतारी अस राखिहै तुमका कृपा निधान।

सबद करम समरस बनै मधुर होइ ब्यउहार
कवि का लच्छन हइ यहै उर ते होइ उदार।

धन की इच्छा ते बडी जस की इच्छा होइ
स्वाभिमान जग मा बडा कवि के सिच्छा सोइ।

होइ चटोरो जीभ जो और रूप कै ध्यान
टहलइ की आदति अगर भला करइ भगवान।

एक पुत्र की चाह मा पायेन लरिको सात
किरन मिली सपनेउ नही भई अँधरिया रात।

करौ कामना तुम वहै हइ जेतनी औकाति
हाँथी कबहुँ न हुइ सकी चूहे जी की जाति।

गरमिन मा कुत्ता दुखी बूढ़े सर्दी पाइ
बिधुरन की बरसात मा रहि रहि देह पिराइ।

दुइ बहुअन के बीच जो, दुहिता रहइ कुआँरि
बिना अगिन के जरि मरै नित्त मचावै रारि।

घर की मलिकिन का लगै अगर चाट की चाट
भितरै भीतर होइ घर, बदि कै बारावाट।



का करिहै चिरई चुनगा

प्रातहि लै जगी कैन गये पिय
साँझ भइ घर आवन नाहीं।
भूखेन दौस बितावति हँइ मुल
स्वहु डोजल पावत नाही।
राह निहारि निहारि थके दृग
कौनँउ धीर, बँधावत नाहीं।
आस जरै बिसवास जरै
घनश्याम जु काहे बुझावन नाहीं॥

फाटि गवा धरती का हिया
पुनि फाटि गयी अँगिया सी जवानी।
वैठि गये सब गाल बेहाल से
आँसुन काज मिलै नही पानी।
बादर ते भुइ गोड रही
मिलिहै हमका कब चूनर धानी?
हफ्फति जीभ निकारे दुखी
रिरिआति भे पादप मानी गुमानी॥

प्रानन ते अटकी है कहूँ
कोऊ कफ्फन कै बदि धाँल लगावै।
बोचइ मा उडि जाति मरो
जनो सूम सों बादर ठेंगा देखावै।
शक्कर माटी को तेल औ रासन
भाषण मा जनना नित पावै।
बच्चा मरै चहै जच्चा मरै
मुल नाउनि गीत पुरैते को गावै॥

का करिहै चिरई चुनगा जब
खतन मा कहूँ बीजुन पइहै
का कहहू इन नलन मा अब
भैंसिन के मिलि झुंड नहइहै।
का कबहूँक उये सविता
अरविन्द उघारि मरन्द उड़इहै।
कौन घरी सजनी अब प्रीतम
घास धरे सिर भीजति अइहै॥



ईमानदारी कइसे निभइ

सब खँइचइ का ख्याल तैयार
ईमानदारी कइसे निभइ।
ब्योपारी बेइमान कहावैं
बिन बेइमानी पार न पावैं
बोलॅइ साँचु तौ हाकिम हुरहा
पूँजी लौनउ नोचि नसावैं
लेइ दमाद ते जादा खातिर
इस पेहर मुछमुडा सातिर
बनइ न गैलल कस ब्योपार
ईमानदारी कइसे निभइ।

सपलाई अपुसर मुँह बाये
अनखाये हुइ जो अनखाये
रहो सहो नेता पलझावै
थाने बोहरी मार लगावै
लगी रहइ रासन मा लाइन
करि बिलेक सब माल नवाइनि
कौन घाटा सहइ कोटेदार
ईमानदारी कइसे निभइ।

बीस लाख सरकार ने आना
आध पर मंत्री का धावा
पाँच लाख अफसर के हाथे
दस फिरि ठेकेदार के साथे
बनतइ बन पुल पुलिया टूटइँ
बाढ़ कै फव्वारा छूटइँ
लावइँ कहाँ ते ठेकेदार
ईमानदारी कइसे निभइ।
नेता कहइ कि मंत्री जानइ
मंत्री कहइ कि अपसर जानइ
अपसर कहइ कि बाबू जानइ
बाबू कहइ कि फाइल जानइ
फाइल कहइ कि पइसा जानइ
बस मिलि अपनी अपनी तानँइ
नियाउ भवा जंगल केरि गुहार
ईमानदारी कइसे निभइ।
मारिनि बन मंत्री कुछ दंगल
बगियन ते बत्तर भे जंगल
जौन जहाँ बहु करिसि हलाली
बात बात मा भई दलाली
कौनउ मौका जाइ न खाली
नेता जाली अफसर जाली
करँइ सविता अँधेर, भिनसार
ईमानदारी कइसे निभइ।
बंदी प्रजातंत्र की बाँधे
जन पूजा की डोली काँधे
हम अजेय हन चहै जो करी
चोरी डाका और तसकरी
दोहरे मन मा खेलि रहे हन
स्वतंत्रता अब झेलि रहे हन
कब कुत्तन का त्रिउ दरकार
ईमानदारी कइसे निभइ।

ओमग मिला त लूटउ फूकउ
पछिनइहौ यहि बदि न चूकउ
वहिया करि ल सि अस जनता
भिनकँइ बहुत ओढ़ि सज्जनता
बँगला चार अलाट करावउ
ना फोक्कन मा नाँउ धरावउ
लड़ि पइहो कइसे चुनाउ तुम
हुइहै बन्द प्रचार
ईमानदारी कइसं निभइ।

●

चील्ह भोज

जयसुख लाला के लरिका की कइके विआहु लौटी बरात
मिलि यार दोस्त माँगइ लगे नेउता करिवे की बात बना।
हमरेउ घर कारटु आइ गवा तनि जिउ जुड़ान खुशियाली भइ
कपड़ा लत्ता धोयेन पहिरेन चलिबे को हुफर दलाली भइ॥

फाटकइ औंर लाला ठाढ़े जो आवइ ओहिका बैठारँइ
छिन भित्तर मा भरि गँइ कुर्सी सब मर्द मेहरुआ बोलकारँइ।
देखतइ खन छोट गिलासन मा कुछ करुआ करुआ आइ गवा
सबके हाथन मा जहरु अइस जाने का कौन थमाइ गवा॥

जस घूँट पहिल खँइचेन तइसेइ मुँह चरपरान बकठाइ गवा
डेरभुत हुइ चुप्पे धरेन ठौर सोचेन जइ कौन सवाद नवा।
तब आये जयसुख लाला जो बोले अब भोजन करउ चलइ
सब भई मारि कै दौरि परे तउ दारि हमारी कहाँ गलइ॥

एकन का नुचिगा पइजामा एकन का कुरता फाटि गवा
लरिका महतारी ते छूटा कोउ कइसउ बाराबाटि भवा
दुइ मेजन की धक्का मुक्की कुछ लिहे पलेटइ मुँह ताकंइ
कुछ भोजन कै मजोग छाँड़ि औरइ सजोग लिहे हाँकंइ

हुइ गवा कबड्डी अस पाला जो चीरि फारि घुसिगा खाइसि
जो बूढ़ ठूढ़ सो रहा ठाढ़ बिरधापन कोसिग मुँह बाइसि
जो रचउ कीन्हिसि लाज सरम नहु पेट कन्दावइ ठाढ़ ठाढ़
एकइ मन आवइ एक जाइ सोचेन हुइ फँसिगा आजु गाढ़

कौनउ तरकारी को चिमचा मीठे पोलाउ मा वोरि दिहिसि
कोउ रसगुल्ला कै चुअनि रसा खस्ता मा दाबि निचोर दिहिस।
मेहरारू लरिका अउ आदमी अपनी घातन मा धरै लाग
ज पाइसि जौनी घास फूस वहु कटकटाइ के चरै लाग।

कौनउ जूठी लइकै पलेट चटनी गिआज ते खाइ रहा
कौनउ अध पिये गिलासन मा पानी लइ घेंट नबाइ रहा।
सौ जनेन क्यार रासन पानी ओहिमा दुइसौ मनई पिलिगे
वाह्मन ठाकुर अउ मुसलमान सब भेद भूलि एकजुट मिलिगे॥

सब तोर देबालइ दिहिसि भोज घन जाति पाँति कै अधकारु
कुछ भुखजरु लिहे चले आये वसि चाटि तनिकु जूठा अचारु।
ठाढ़े भेन जुरि कै याक ठौर नथुनन मा घुसि भथकाइंधि गइ
ना गली रही सिरकिहिन बदि नेउता की अइस चिराँइधि भइ॥

तब लौं आवा लरिकौना जस सब रसा देंह पर नाइ दिहिसि
हम देखेन कटहा तोता अस वहु सारी कहि मुँह बाइ दिहिसि।
घर मा सुन्ना अन्यारि देखि लौटेन वैरंग सन्नानि देंह
सब पूछिनि भोजन कइ आयेउ मुँह सूखि गवा हुइ गेन बिदेह॥

। सियाराम मिश्र

गायेन जस दे।

हिम कै बिटिया

जौन हते मँगता कबौ सो
बनि गे महासन्त तुमारे सहारे।
बानी रसीली करौ तुमहें
हरौ भीर कै पाप भये भिनसारे।
तारि रही हौ जुगाधिन ते
नहीं ढोल गँवार न सूद बिचारे।
पाइ कै घाट कबीर भये
न अधीर भये कोऊ आइ किनारे।

हौ हिम कै बिटिया तुमहें
हिमराज तुमै नित बैया चलावै।
कोऊ करै अभिमान मुला
शिव के सिवा कोऊ मनाइ न पावै।
पाप हरौ त्रय ताप छरौ
करौ मंगल जो तुमका गोहरावै।
संस्कृति के उद्घोष सी कोष सी
देव सदी सुधाधार सी धावै।

कूरा परा कहूँ लासि परी
कहूँ होंइ हजारन कै बटवारे।
पूत तुमार बहाइ रहे
कहूँ कोठिन कै गँदलै परनारे।
पाती न बाँचि सकै लछिमी
बहिनी उनका जो लिखैं भिनसारे।
ठाढ़े कहूँ पछिताइ भगीरथ
और लजाइ रहें शिव धारे।

साचु है पूत कपूत भये
मुला हौ तुम इन्दर लोक की गइया ।
प्रान अधार बनी कृपि की
ऋषि बैठि कै द्वार हूँइ लेति बलइया ।
एक बनौ अर, नेक बनौ
महामंतर, नाविक पार करइया ।
सीतल बाढ़ि सुधाधर ने
ममतामयी हौ यहि देस की मइया ॥



जब आवा दौस देबारी कै

जब आवा दौसु देबारी कै मेला मा उमड़ी भीड़ बड़ी
कोउ थामे लछिमी, अउ गनेस कौनउ मददुइया लिहिसि बड़ी ।
बाबू जी याकै घूमि रहे साथे मा लिहे सुघर लरिका
बबुआइनि संघइ उलरि रहीं हँसि हँसि सुख बाँटि जलम भरिका ।
लरिका के दोनउ हाथन मा चमकुआ खेलउना अइस रहँइ
जइसे माटी की भाखा मा कहि साँचु जगत का सकुचि दहँइ ।
यतने मा वहै लरिकवा का दोसर लरिकौना देखि परा
लरिकाँई केरि अजब दुनियाँ जह जानइ ना ठगुआ नखरा ॥
बोलकारिसि कहाँ लिहे झोरा मेला मा अइसेन घूमि रहा
नंगे पाँयेन उरझे बारन सब धूरि धूसरित सटपटहा ।
वहु सुड़किसि नाक निहारिसि तनि मुल रंचउ बक्कुर ना फोरिसि
उगिलिसि समाज कै अदिनु घोर कुछ नई सभ्यता का झोरिसि ॥
बलु कहके झोरा खँइचि लिहिसि जो जिउ परान अस हाथे मा
बाबू बबुआइनि छूटि परे जो रहँइ अबइ लगु साथे मा ।
बोला बाबू का पूत सकुचि ओहि मइले झोरा का निहारि
जइ पउआ भरि खंडी चाउर तुम राखे हौ यहिमा सुधारि ॥

| कियाराम मिश्र

गायेन जस. दे

जइसे श्रीकृष्ण सुदामा के बगले ते झटकिनि पोटकरिया
तब निसुसि कहिसि जो गिरि जइहैं का खइहै मादी महतरिया।
जो कौनउ भूत भविष्य नहीं बसि फटी आँधिया ढोये हइ
तम ते जादा परभात मनौ दृग मा नाखून गड़ोये हइ॥

बाबू जी आये लौटि पौटि झिड़िकिन केहि ते बतराइ रहा
मगरे बुद्धन संग खेलि खेलि परिवार कुटुम्ब लजाइ रहा।
फिरि लरिकौना चिल्लाइ परा जब पहुचि गवा घर कै जौरे
देखिसि दिन्ना का ठेला पर मन हुटकिसि पाँउ तहूँ दौरे॥

ऊ देखउ नेकर का पकरे माटी का तेल भराइ रहा
हइ मस्त गरीबी बाना मा मन भा जानै का गाइ रहा।
मुँह फोरि कहिनि बाबू उदास रदखैली संपति करै नास
फँसि गयेन हियाँ लइके मकान ना हइ बिकास कै रंच आस॥

हुक्की बक्की औकाति लिहे मुरि मुरि घूरिसि घर चला गवा
मुँह बबुआइन का अइस खुला नयनू छोड़ाइ जस होइ तवा।
जो कालिह गयेउ संपति महियाँ मनहूस पुकारन पर भइया
तउ जनिबा उजरि सबेरु गवा खूँटा ते गइ तोराइ गइया॥

साबुन केरी मरजादा हइ बहु यतना मैल छोड़ाइ सकइ
कब गंगा जलु भइहै ओहिका जो जलमइ और शराब छकइ।
कौनउ घर परब देबारी हइ कौनउ घर फाका मस्तो हइ
अँधियारु बहुत हइ दुनियाँ मा रोशनी न आजउ सस्ती हइ॥



अखण्ड रामाइनि

जब अबकी ते मलमासु लगा घरमा अखण्ड भइ रामाइनि
ढोलक तबला अउ हरमुनियाँ गाजा बाजा सब झमकाइनि
दीना दिनेश परभू दयाल जो किहिनि तुरन्तइ फलु पाइनि
जग भगत कहइ उनका लागा हाकिम हरहा सब अपनाइनि

देखा देखी के दुनियाँ हइ, हइ धीरजु देखा देखी मा
बहु मुरदा हइ बहु हइ लुजगुन जो भाउ गढ़िसि ना शेखी मा।
हन भीतर ते केतनेउ कोइला उप्पर ते सब जन भगत कहइँ
हमरी लछिमी के आगे झुकि मुँह बन्द करइँ मुल स्वगत कहइँ।

जेतने अपसर जेतने गाहक रामाइन सुनिबे कहँ आये
इंघी काण्डन पर होंइँ काण्ड बोइ बातन के फागुन लाये।
दुइ चारि मजूरन अस मुनीम बेमन छंदन का गाइ रहे
घर के मालिक अउ मेहरारू हकिमन आगे सिरनाइ रहे।
देउतन के फोटू श्रोता भे पढ़वैया भे कुछ नौजवान
फिरि लरिकिन केर झुंड आवा जइसे ब्रज की गोपी उतान।
लरिकी लरिका संजोग पाइ अठिलाइ रहे मुसकाइ रहे
अउ नई नई तर्जन के मिस कुछ हाउ भाउ समुझाइ रहे।
सुनि कै रेहकनि बुढ़िया बुढवा अधजगे परे अनखाइ रहे
तुलसी बाबा कै छाती पर मूँगे की दारि दराइ रहे।
जेतनी सब किहिनि कमाई मिलि ओतनइ ओतनइ हइ रोगु बढ़ा
मन मा अउरइ कुछ धुकुर पुकुर मुख-राम भाल चन्दन तिकड़ा।।

उप्पर ते जस चन्द्रमा सुघर विज्ञानिक पाइनि राख मुला
मन्दिर ते उर के मन्दिर लौं जहु धरम गँवाइसि साख मुला।
जब भरधर आधी राति भई तउ नींद जगी चेतना हरी
सब उल्टा पुल्टा पढ़ै लाग सब रहनि तजैं रहि गई धरी।

आवा प्रसगु जब सागर का बोले तब राम सकोप कहँइ
मुल भरे नींद आँखिन मेंहियाँ पढ़ि डारिनि राम सपोक कहँइ।
श्रद्धा का पढ़ि डारिनि अद्धा सीता का फीता एक पढिनि
जो रहँइ सबद ना सपने मा तारा का नारा पढिनि गढिनि ।।

चटकई कौनु अब पढइ अइस लरिकन मा कसिकै होड़ लगी
मालिक मलिकिनि सब सोइ रहे मुल ठेलुहन कै गठ जोड लगी।
कइसेउ रामाइनि भई खतम घर का सम्पूरन पाप भगा
मिलिहै न नरक मा इनँइ ठौर जो अपनउ का दइ रहे दगा ।।

परिवार बढति व्योपार धरम सब कुछ नौकर ते करवावैं
आपनि छवि देखे ते डेराँइ ना मरैं जिअइ का कल-पावैं।
मुल जानि गये सब सेठि भगत यू रामाइनि का फलु पाइनि
चोरी करिबे की ढाल बनेउ अस राम तुमारे गुन गाइनि ।।

आरती भई परसादु बटा हुइगे कुछ कै जूता गायब
दुइसै रुपिया कै चपत लगी साहब छिन मा बनिगे नायब।
जस आखेटक कै मधुर गान जस खातिर खातिर डाकुन की
तस रामायन का आयोजन माइक पर भीर पढाकुन की ।।



आवा परधानी का चुनाव

जब नइया सासन की डोली भकुरो जनता खीझैं परान
तउ आपन मुँह लुकवावइ का गाँवन पर कसिकै धरिनि सान।
अखबार अकठ्ठइ बमकि उठे हुइहै परधानी का चुनाव
मचि गयी खलभली गाँउ गाँउ बढ़िगा लँतिहाउज, बढ़ा चाउ ।।

सब दौरि परे जस होंइ गिद्ध सरकारी हुण्डी की खातिर
सपने की दुनियाँ दौरि परी यहि भुँइ मुछमुंडी की खातिर।
घर घर एकइ बतलानि होइ खेती पाती सब पट्ट भई
बसि जौंर रहि गई कूटनीति कपिला नथि कै हरट्ट भई ।।

हुइ गये ठाढ़ दस लाँग बाँधि आपन आपन लइके निशान
कुरमी बाह्मन धोबी तेली रजपासी ठाकुर मुसलमान
सब आपनि आपनि जातिन कैं मिलि आपन आपन व्वाट गिनिनि
जो लतमरुआ ना कहूँ रहँइ उइ व्वाटन खातिर न्वाट गिनिनि

जब निरविरोध समझौता बदि पुरिखा कौनउ कुछ बात कहँइ
सब बोलि परँइ उम्मेदवार हमरी बयारि वहुँ ओर बहइ।
थुक्का फजिहति मा परि दरि छरि चुप साधि घरन का लौटि जाँइ
जो सन्निपात कै रोगी हुइ उल्टे बँदन पर बड़बड़ाँइ।

देखउ वोटर के करामाति सबका परधान बनाइ रहा
कोउ लप्प लप्प चिलमैं बारै कोउ ठर्रा मा गुन गाइ रहा।
दीनू उघारि बखिया बोले वोइ दुसमुन हमरे बाबा कै
बनिगे परधान कहूँ जोखे हँइ जूता बिन पैताबा कै।

कोउ कहइ कि मुरगा फंसा मोट कोउ कहै न सुनिबा रंच झूठ
हम ओट न द्याबै दिल्ला का नहिं तौ मचि जइहै खुली लूट।
वोइ रामदीन परदादन कैं आपन सनबन्धु बताइ रहे
देहरी की धूरि लिहे डारँइ पानी अस रकम बहाइ रहे॥

काहू की लछिमी पर बीतइ कौनउ गुंडई देखाइ रहा
कौनउ गप्पन मा पूर गाँउ सरगउ ते बाढ़ि बनाइ रहा।
नौकरी देइ कोउ लरिकन का कोउ बेइमानी के गिनइ व्वाट
जइसे पाबइ उल्टा टेढ़ी वहु सिग्यिान अस बसइ ग्वाट॥

जब तीनि दौस का बखतु रहा दुइ परधानन मा लट्ठ चला
दुनहूँ दल कै चालान भये बनि गई पुलिस कै भली भला।
मटुकी फूटी सब खुली पोल अउ माटी मा बहिगा पानी
कसकैंधी रोटी जेलि भई यह पाइनि लच्छू परधानी॥

तब पाँच पाँच सौ रुपिया दइ खिसियाति भये घर का आये
भंगारि परीं हुइगा चुनाव पछिताइ रहे सब मुँह बाये।
दुसमनी जुगाधिन की यहि बदि अबकी चुनाव मा पूरि भई
जो उड़ति रहँइ अंग्मासे मा उनकी आसा सब धूरि भई॥

जब आवा दौसु अलच्छन का हुइ अध्यापक अपसर आये
धूरे ते एक उमेदवार उनका घतिआइ गुपचि लाये
खटिया परि गइ कालीन विछी फिरि होइ लागि जमि कै खातिर
चौगिरदा घुघुआ अस बइठे बदमास इलाका कै सातिर

जो पिहिनि नहीं बोइ छकिनि दूध बोतल पर बोतल खुलै लाग
सब प्रजातंत्र कै परिपाटी करुई शराब मा घुलै लाग
जो रहँइ सिपाही होस गाट बेहोश भये मुँह मा गिरि गे
जइ हाय भगीरथ गंगा कै मुँह खोलि नग्रहा मा तिरिगे

भनसारु भवा खग चहचहान सब पहुँचि गये विद्यालय मा
अस गलइ लागि जन तंत्र देह जस पाँडव गलँइ हिमालय मा
जिनके जेबन मा ओट रहँइ उइ खैर ख्वाह भगवान चले
नेता या देउता धरती कै जगु जीतइ आजु किसान चले

जेहिका खाइनि तेहिका गाइनि बेइमानी की चढि बजी पारि
कुछ ओट खोंसिगे छपरा मा कुछ इंधी उधी दिहिनि डारि
फिरि भरें मारि घुसि गई भीर कइ सके न घरुआ होस गाट
गड़बड़ मचि गा चलि गइ लाठी रुकिगा चुनाव उखरे कपाट।

चुचुआति तेलु जेहिके माथे गरिआइसि बकसु उठाइ लिहिसि
सब जीति हारि लइ भाजि परा कुछ कहिनि बहुत जहु नीक किहिसि
डारिसि माटी कौ तेल थोर बकसा मा आगि लगाइ दिहिसि
हिकमति बेइमानी अउ तिगड़म छिन बित्तर माँहि जराइ दिहिसि।

हल्ला हुइगा बकसा फुँकिगा सब किटकिटान अपसर प्यादे
कुछ पकरे गे कुछ मारे गे कुछ फाँदि भजे नाला नाँधे।
चालानु भवा यातना भई कुछ रोइ रोइ पछिताइ रहे
झंडा हइ ढोउनि प्रजातंत्र सब कोसि रहे फलु पाइ रहे।

बोइ मौजन मा जो हुइ प्रधान घिउ चुपरी रोटी खाइ रहे
योजना प्रगति अनुदानन ते जेबन की जोति जराइ रहे।



गाँवन के नेता

कुरता धोती खद्दर क्यार
रंग मटमइलो खेत न हार
भोर होति मुँह चुपरँइ तेल
रार्लइ होय गाट ते मेल
यहि को लोचर ओहिकी सार
करतब गाँव के नेता क्यार
रोजु रम्भि कसबा का आवैं
लम्बी चौड़ी लौटि सुनावैं

काँधे पर लटकौआ झोरा
बसि बातन को भूँजइ होरा
पटवारिन के जइ हरकारा
आधे आधे को बटवारा
सब जानब मा दखल लखाइ
रहे सिपाही इनँइ बढ़ाइ
जइ अँधरे धुंधरेन की आँखी
अति सुकुमार बिकाऊ साखी

चश्मा को इनके रंगु लाल
जइ एकइ मा तीनिउ काल
अति परमारु जेब मा ओट
खाइ पिअइ की कहूँ न खोट

गँवई गाँवन केर मजूर

तीनि माह नेउतन मा काटैं
लुच्ची कै लपसी अस चाटैं।
पइसा होइ त कलिया रोटी
नाँहि त होइ देबारी खोंटी।
मिलइँ न जो गुपचै भिनसार
ताक न जानँइ करि व्यवहार।
कौनउ नेक सलाह न मानँइ
सब ठगुअन का आपन जानँइ।

कौनउ नाँहि चाह बलवान
वसि रोटी की पढ़ँइ पुरान।
झुकी अँधेरिया चारिउ बार
पाइनि कथरिन ते न उबार।
कूकुर और बिलइया गावँइ
थके नीद मा जानि न पावँइ।
कटइ दुपहरी बरगद तीर
जह चौपारि सुनइ सब पीर।

लरिका माँगइ कुछ रिरिआइ
जइ कनकौआ देइँ कटाइ।
आपनि आदति ते मजबूर
गँवई गाँवन केर मजूर।
कटि गइ उमिर न सोचिनि और
कर मा फरुहा मुँह मा कौर।

कसबा का रक्सा वाला

रोजु सलीमा देखइ जाँइ
भूखेन घर लरिका चिल्लाँइ।
जो कौनउ देखइँ मजबूरी
चारि गुनी माखँइ मजदूरी।
रहिबे का टीसन चौराह
मौका पावँइ करँइ गुनाह।
खाँइ पुलिस वालेन की मारु
नेता बलफँइ अत्याचारु।
जइ अदिमी का मरखँइ खूब
देखि उठक्कर दावँइ दूब।

सँझलौखे सब हीरो मात
इनकी बहुत बड़ी औकात।
पाइ अँधेरिया होइँ जवान
इनकी अलग-थलग पहिचान।
बहुत मुला धन ते मजबूर
रोटी के चक्कर मा चूर।
जब श्रीदेवी गाना गावैं
सिटिया हल्ला डारि बजावैं।

बीड़ी फूँकइ पेट करोइ
जानउ रक्सा वाला सोइ।
जबरदत्त जानँइ रिरिआँइ
मुल कमजोर जानि गुर्राइँ।



अब कै किसान की दुनियाँ

जरीकैन सइकिल मा बाँधे
डारे एक अंगौछा काँधे।
झोरा मा कटहरु औ आलू
सूखे बार पिआसो तालू।
न्यूजिल और पिलिन्जर ढूँढ़इं
कामदार हुइ अपसर मूड़इं।
बाबू जी कहि जीभ खियानी
प्रगति शील की यहै निशानी।

पुलिस पिआदे अउरइ भाखैं
दूध दहिउ ना घर मा राखैं।
देखा देखी मा हुइ भिनके
पढ़इ पूत कनवेन्ट म इनके।
ट्रैक्ठर कै करजा मा लदिगे
सूतइ देति जिन्दगी बदिगे।
छाँडिनि बरगद केरी छाँही
सहर गाँव कै भइ गलबाँहीं।

ताल करिनि मछरी ब्योपार
यहु गुनु नवा दिहिसि सरकार।
ठोरइ बठिया फूस लखाइ
छपरन बिजुरी बलब सोहाइ।
दूध दुहइं शहरन का लावइं
लरिका भिनकइं माठा पावइं।
हीटर रोटी थकइं बनाइ
शहर घुसे गाँवन मा जाइ।
यह अब कै किसान की दुनियाँ
फूटी ढोल कसी हरमुनियाँ।



कारीगर

रुपिया अस्सी रोज कमाँइ
भोर उठइँ अउ बासी खाँइ।
नित अउरन के महल बनावँइ
आपन छपरा माँहि बितावँइ।
कन्नी बसुली आपनि हाथ
जइ निरमाला रहँइ अनाथ।
पिअँइ धकाधक रोज शराब
जइ सम्रलौखे केर नवाब।
पइजामा पर पहिरि कमीज
जइ कारीगर जग नाचीज।
इनँइ दिहिसि परमेसुर शापि
थकँइ पेट को गड़हा नापि।

हिन्दी के टीचर

लिहे सफेदी कपडन क्यार
मुँह ते झारँइ फूल हजार।
ज्ञान होइ का लिहे गरूर
लुजगुन देही कहँइ हजूर।
भीतर कोतरे उप्पर ठस
मजबूरी कै ब्रह्मचर्य अस।
गप्पन कै राखँइ भंडार
तारा तोरँइ नित्त हजार।
टुटही रहे साइकिल ढोइ
राखँ गरिमा पेट करोइ।
जो धोती तउ ढीली काँछ
इनकी दुनियाँ झूठ न साँच॥

गाँवन के छैल चिकनियाँ

पटरा का पैजामा धारे
उप्पर लाल अँगौछा डारे।
तेल रहा बारन चुचुआइ
छैल चिकनियाँ मेला जाइ।
पानु खाइ बीडी सुलगावैं
लिहे जलेबी घर का आवैं।
ओंगँइ सुरमा आँखिन माँहि
बदि के पूरी आलू खाँहि।
बजति ट्रान्जिस्टर जो होइ
इनते बडा न जग मा कोइ।

लागि तनिक जो कच्ची होइ
तउ जह दुनियाँ सच्ची होइ।
पाँउ दुबरिया पेटु मोटान
भिनकँइ घर मा शिशु नादान।
इनके डाक्टर झोरा छाप
बने मरीजन बदिं अभिशाप।
मेला ठेला इनकी शान
जइ मौतरिहा नये जवान।



जइ मास्टर अँगरेजी क्यार

जब कौनउ अनपढ़ का पावँइ
तब अँगरेजी बोलि सुनावँइ।
दरजा मा नानी मरि जाइ
इनका कछू न आवइ जाइ।
अँगरेजी कै लइ अखबार
जोर जोर बाँचइ बहु बार।
पूँजी पति के देखइ ख्वाब
गाँठे लरिकन माँहि रुआब।
बड़े गिरामर बहु अनुवाद
गूँजि रहा इनका जयनाद।
दाढी घिट्टइँ रोज सबेरे
आठो याम लरिकवा घेरे।
बाँधे घूमँइ कंठ लँगोट
स्निग्ध क्रीज बदि घोटम घोट।
जइ मास्टर अँगरेजी क्यार
इनके नखरा सहस हजार।



बिआहु गाँव कै लरिकी का

जब ते कानन मा भनक परी बप्पा बिआहु तइ करि आये
अस धक्क भई तब ते जिउमा लइ धुन्धि मनौ बादर छाये।
दिन राति सोचु जइ डेहरी अब मइया बाबा कै छुटि जइहै
काजरु अम्मा की आँखिन का घर का दुलार सब लुटि जइहै।

जब बइठइ कबहुँ अकेले मा रुँधि जाइ गरा अउ भरि आवइ
अस बँधइ तार तब हुचकिन का नैनन मा सावन घिरि आवइ।
सरमन मा घर ते निकरइ ना मन की मन मा सब रहइ धरी
जब दौस धनछुआ का आवा मेहरारुन ते भरि गइ बखरी।

सरपच होइँ परपंच होइँ जेहिके मन मा सो कहइ तौन
उलरै महतारी को करेजु पाथर अस हमका गढ़ै मौन।
कइसेउ कोठरी ते बाहेर का बिटिया का सबै पकरि लायीं
कोउ कहिसि कि ना सरमाउ बहुत गोफनी अस डेलु जकरि लायी।

मन का मसोसि देखइ धरती उप्पर न मूड़ उठाइ सकइ
जो बरइ अगिनि भितरै भीतर खारा जल नाँहि बुझाइ सकइ।
वहु समउ फलाँगति आइ गवा तहजदँ मनौ शुरुआति लिहे
पति देउतन कै समुहें पुरानि आदर्सन की औकाति लिहे।

आई धूरे पर जो बरात दुइ लरिका गोला दागि दिहिन
मन कै झुरान बाँधी टटिया दगतइ मानँउ दइ आगि दिहिन।
चलबीसी उथल पुथल हलचल का ऊहा पोह बखान करी
जल अलि अस मानौ चित्तु भवा अधभीजी सिरजनहार धरी।

आई बरात आई बरात लरिका मनइँ तमकै लागे
अँगरेजी बाजा सुर काढ़िनि फिलमी गाना गमकै लागे।
शक्कर कोउ भरिसि डेलइया मा कोउ हाथे लइ गिलास दौरा
मिलि यार दोस्त सहयोग किहिन गा गाँउ भूलि कौतिया मौरा।

गायेन जस देखेन।

ाराम मिश्र

चिट्ठा माँगिनि बरतौनी बदि फिरि होइ लाग तक्का तक्की
दुइ दुइ रुपियन पर लड़ैं लाग जो रहैं तनिकु बक्की झक्की
भा शिष्टाचार कलेवा मा बेलबा मड़बा समधोर भवा
अब बिदा करउ अब बिदा करउ चारिउ वारन ते शोर भवा

हइ गाँवन मा अबहूँ रहि गइ मानवता कै पहिचान थोरि
जइ महानगर के साँपन अस ना फुफकारैं कुलकानि बोरि
आटा डेलवन मा लइ दौरा कोउ गोहूँ कोऊ दुइलहरी
भरिगे बोरा सब जुटा गाँव लइ बिदा केरि पीड़ा गहरी

रोवइ लागी डिडकारि मारि लरिकी ना तन का होस रहा
मानँउ हइ कौनिउ गाज गिरी बाकी आँसुन का कोस रहा
बप्पा पर लिपिटि परी बिटिया बप्पा हुचकिन मा समुझाइनि
अम्मा अचेत हुइ भुँइ देखिनि लरिको जलमें को सुख पाइनि

अस लागि रहा धरती रोवइ, रोवइँ बिरवा नभ रोई रहा
जइ घरी किहिसि हइ कौन गजब धीरज हइ धीरज खोइ रहा
बिटिया की पहिलि बिदाई मा पाथर कठिनाई का छाँड़िसि
नयनन मा उबलि परे झरना दुख भली भाँति यहि खन डाँड़िसि

लरिकी पकरैं तउ छाँड़ै ना सब भाँति भाँति समुझाई रहे
जल्दिहीं बिदा हुइके अइहौ कहि पीरा और बढ़ाई रहे
जब समुझाये न बनी बात तउ बलु कइके बैठारि दिहिन
दुइ भाई करा जिउ कइके पालकी खोलि के डारि दिहिनि।

घूरे के बाहेर मैं कहार सब लौटैं और पटाइ रहे
मानँउ भगारि परी बरमा हुइ शिथिल अंग गुँगुआइ रहे।
कोई काहू ते बोलइ ना पाँयिन ते रचँउ डोलइ ना
का खइहैं पीहैं गौतरिहा यू थका मेढु अस खोलइ ना।

जो लौटि पौटि के खबरि दिहिनि दुइ कोस तलक के राहगीर
उइ बिटिया का रोउतइ पाइनि भा ओपना पाँवन के जँजीर
कम बैस अठारह ते भइया ना लरिको का बिआहु करिअउ
ना सौंपि कसाई लोभिन का बिनु आगि जिन्दगी भरि जरिअउ।

सनबन्धु बराबरि मा सोहइ कुल के मरजादा छाँड़उ अब
ना रुपिया के मरघट महियाँ अपनी बिटिया का गाड़उ अब
सुख सपना हइ जो प्रेम नही, चहि अरब खरब लौं द्रव्य होइ
ओढे अकास भुँइ का बिछाय सदभाउ जहाँ हइ सरगु सोइ।



तितुली आई

फूल फूल पर पाँउ अड़ावैं
जहाँ तहाँ ते उडि उडि आवैं।
कारे पिअरे और बैंजनी
रग बिरंगे पख देखावैं।
लरिकन का बहुतै मन भाई
तितुली आई तितुली आई॥

कृति हइ कौने कलाकार की
देखतइ रहइ जोन तनि देखइ।
सुन्दरता की अचरज गठरी
कवि समरथ को है जो लेखइ।
कोमलता की कोमलताई
तितुली आई तितुली आई॥

फूल फूल से घूस उगाहै
थिर न कछु जग देखि उमाहै।
लगइ प्रकृति के घर की बिटिया
नहुँ भरि माया सबइ ठगावै।
भरइ दृगन मा चंचलताई
तितुली आई तितुली आई॥

देखतइ उड़इ जुरइ जिअराते
पइयाँ लागइ अस फुलबारी।
पंखन मा छवि अमर लुकाये
हुलसइँ राजा और भिखारी।
सीढ़िन चढ़ै मनौ शिशुताई
तितुली आई तितुली आई॥



बरखा रानी

अउरे जुग मा हुइहै बसन्त
कलजुग मा बरखा रानी हइ।

अउरे जुग मा हुइहै बसन्त कलजुग मा बरखा रानी हइ
हइ राजि पाटि सब वहै ठौर जब भुँइ की चूनर धानी हइ
तपि रहा जेठ आगी बरसइ तरसंइ जल का चिरई चुनगा
सूखइ लागे बिरई बिरवा देही मा निकरि परे सुनगा।

भुँइ फटी बेमाईं अस हुइ गइ अदिमी लरिका चिल्लाइ लाग
भा ठाढ घामु आँखी फारे घुसि गये बिलन मा कार नाग
दुनियाँ अकास देखइ लागी कुत्तन की हफनी बढ़ै लाग
पाँवन मा झलका परै लाग खपड़ी पर गरमी चढै लाग।

जब लुअँइ साँस उगिलइ लागी तब अद्रा आइ नखत गरजा
धरती का झुकि चूमिसि बादर, बिरही बिधुरन का जिउ लरजा
साउन राखी की किहे यादि दिन गिनै लागि बहिनी दुखिया
जिनके घर सम्पति पिउ राजँइ हइ उनते कौन बड़ो सुखिया।

पानी जीवन मा भेदु नहीं यहि बिन धरती नभ सब सूना
यहि बिन बिरवा खेती पाती मरि जाँइ मरति जस हइ चूना
दादुर मछरी कछुआ जोंकइ इनका सबका जल देउता हइ
गोरू हरहा जलचर नभचर अठिलाँइ कि जइसे नेउता हइ।

बरखा हइ तउ धन्धा करिया हइ बरखा तउ नद्दी नाला
बरखा के रुठतइ डारि देइ सूखा मुँहिमा बड़का ताला
बरखा हइ तउ यहु देस सरगु जप जग्गि होंइँ बरखा हित
हइ सूत कपास और धुनियाँ बरखा सुदेस के चरखा हित।

बादर हुडदंग मचाइ रहे रहि रहि बिजुरी चमकाइ रहे
हँइ लुका छिपी के नये खेल सूरज का मनौ खेलाइ रहे
कइ रहे पहाड़न की हँसि हँसि कहुँ सेत बरन मलिहम पट्टी
पसुरो परबत कहुँ रहे मेंकि उर बाँधे दहकति अस भट्ठी।

कोउ करै पलेबा खेतन मा कोउ घास धरे भीजति आवइ
कोउ भँइसी लिहे चराइ रहा कोउ मन मा आवइ सो गावइ
सहरन मा बइठे दुकनदार अपने जिउ का हुलसाइ रहे
बरखा रानी का बिभव देखि आपुस मा चोंच लड़ाइ रहे।

भुँइ का भगवान किसान मुला बरखा पर टिकी किसानी हइ
बरखा महतारी और बाप बरखा रानी महरानी हइ
भादा घासन की खपड़ी पर मुकुटन का बूँद लजाइ रहे
आपनि बहिनी लहरन का उठि आँखी चमकाइ बोलाइ रहे।

हुहि सुरभि पालकी पर सवार तब लौं गौने बदि आइ गई
चपला-गुड़िया के माथे पर अनखा अस मनौ लगाइ गई
बगुलन की सुघर अल्पना भइ मेढकन की साँचु जल्पना भइ
इन्दर धनुहाँ का लिहे हाथ यह भुँइ की सफल कल्पना भइ।

× × ×

राम मिश्र गायेन जस देखेन।

आल्हा गावँइ कजरी गावँइ कुछ चुअति भये छप्पर छानी
सब परे गिरे ऊसर बजर हुइगे जवान पाइनि पानी
कहुँ लोटा बँधिगे आटा मा कहुँ लकरी डेगरी गयीं भीजि
कोउ बगिया केरि मड़इया म। टलका जमुनन पर रहा रीझि।

सागर जइसे लहराँइ ताल चितवँइ सबका आँखी काढे
बगुला मछरी के चिन्तन मा हुँइ एक पाँउ कबते ठाढे
हुइके स्वतत्र सब घास फूस मारग सिगरे हइ लिहिसि झाँपि
जइसे गुप चुप लइ लइ सुराग खोफिया चोरन का लेइ छापि।

•

तीसरि साखि गंडुआ होइ

अघिरस्ता मा पी कै आवँ
धड़पड करि साँकर खटकावँ।
पुरिखन केरि कमाई खाँइ
दुइ पइसा ना भूलि कमाँइ।
पिअँइ शराब निकारँइ गारी
बिलखँइ बाप और महतारी।
ठकुर सोहाती कहइ सो यार
इनते बड़ा कौन हुशियार।
भयें नरक चौदसि अस गेह
मँगिहै भीख न कुछु सन्देह।

और न कुछ लरिका पढ़िहैं
होटलन केरि पलेटइ धोइहैं।
मगरे बुढ़वा भिम्मा औन
इनते बड़ा निकम्मा कौन।

खादे बेसरमी का माँस
नगरु करइ इनका उपहास।
करिनि महाभारत निज गेह
बची अकहुला मा बसि सेह।
लरिकी लरिका कहूँ क जाँइ
जइ अपने मा मस्त लखाँइ।
गलत करँइ अउ मानँइ ठीक
यहै सुघर माया की लीक।

खपरे के दुइ पइसा बोरिनि
झूठे नखत अकास के नोरिनि।
जो इनकँ समुहें समुहाँइ
अगिली कोलिया मा कटि जाँइ।
अपने करमन रहे घिनाइ
इज्जति आपनि रहे छिनाइ।
दुपहर तक सोवँइ जइ तानि
निकरी आँखी लेंगड़ी बानि।
आपन करनी आप बखान
आलस अउ घमण्ड की खान।
सब के पाप थकँइ नित ढोइ
देइँ दान सब आँसुन रोइ।
कहत पुरोहित की सब कोइ
तीसरि साखि गडुआ होइ।

इनते राम छोड़ाबइ जान
जइ मक्कर करि सोवँइ तान।



मीरा बनी

वहु पीर तरासिबे की सहि कै चमकीं दमकी बनि हीरा कनी
उडिगै मनो नींद चिरैया तना अगुनी निधनी जो न प्रेम धनी
वह और है आँखि जो देखि सकै अँधियार म जोति तकै दुगनी
घर ते जग ते न वनी जब तौ गुन गाइ के श्याम कै मीरा बनी

पायेन जो परसादु सनेह का काल भये सब संग संघाती
मै विष कै घरिया भोपना रद पीसि रही कुलकानि की थाती
धूरि भई सब राजि औ पाटि जो श्याम के हौ रंग मा रगराती
पी के सबै मदमस्त भये मुल मीरा बिना पिये हुँइ मदमाती

देह कै भूली सबै सुधि तौ नित राह निहारि अधीरा भईं
कान्ह कै आँखिन रूप भरे भईं.पागल प्रेम गंभीरा भईं
भईं नाद सुधारस ते बढि कै नहीं ढोलक नाँहि मँजीरा भईं
मन मा मनमोहन शेष रहे बिष भा मधु, सादर मीरा भईं

प्रेम कै भूरि प्रभाउ महा जग जीवन कै सब भेद भुलाने
बूड़ि गये सो लगे ओहि पार जो पार लगे मँझधार पराने
छूटि परे परिवार के बन्धन मानुष मूढ़ कहँइ पगलाने
मीरा समाइ गयीं घनश्याम मा मीरा म हुँइ घनश्याम समाने



सियाराम मिश्र

गन्येस जस

शहराती विद्यार्थी

भूत भविष्य रच ना जानँइ
खुद का बहुत अक्किला मानँइ।
पढइ लिखइ मा जिउ ना लागै
दिनु चढि आवै तब कहुँ जागै।
लइ अक्किलि का फुटहा पात्र
नकल सहारा इनका मात्र।
छाती की सब बटनँइ खोले
टाँगइ जस कीर्तनियाँ डोले।

बीड़ी सिगरेट पान शराब
जइ हँइ होटलन केर नबाब।
ऐक्सन जूता देंह गँधाइ
जइ दुबरे आदर्श चबाइ।
कमर मध्य कहा अति सोहइ
छः इंची चाकू मन मोहइ।
कलजुग मा बहु चतुर सुजान
फरा चरइ अउ सोवइ तान।

सेट बारन माँ सोहँइ अइसे
मेघनाथ के पुतरा जइसे।
विद्यालय के चारिउ ओर
हइ सिटियाबाजी का जोर।
ई नाजुक ना देह म ताब
बाजी दसौ शाह कै ख्वाब।
माता पिता न कौडी मोल
ना इतिहास न हइ भूगोल।

झूठ साच की मूरति अइसे
भुँजे बड़कवा भाँटा जइसे।
स्कूटर ते मूतइ जाँइ
महलारी का घर धरि खाँइ।
जइ मजनू की इँइ मन्तान
इनका भला करइ भगवान।

●

नई रोशनी के दस्तूर

पहिले पहल शहर का जाँइ
बीड़ी फूंकंइ पान चबाँइ।
सड़क छाँडि कोलिया तक देखंइ
मन मा ओरइ अचरजु लेखंइ।
जानंइ घर के बड़े पढ़ीस
मुल जइ गुंडा बनंइ खबीस।
आँटा बेचंइ पिक्चर जाँइं
दरजा मा नहिं कबौं देखाँइ।
देखुआ आवंइ निन्त दुआरे
जइ कालेज के राज दुलारे।
दइजा माँगइ साठि हजार
बनिहै डिपटी पूतु हमार।
कहँइ बाप का अपन मजूर
नई रोशनी कै दस्तूर।
प्रगतिसील की जइ तस्वीर
लटी दुदहंडी सरा पनीर।

●

मरी चकबन्दी भई

जनसंख्या बढ़ि रही दिनौ दिन सिकुड़ि गई सब खेती हइ
जाइ रही अइसे किसान ते जस मुट्ठी की रेती हइ
चकबन्दी जुआँ की नाल मरी चकबन्दी भई।

कुछ जमीन चकरोट म निकरी थोरी बारी खोट म निकरी
रिसबति केरि न जो बैसाखी थोरी खुन्स कि ओट म निकरी
हँइ मारिनि हाथु दलाल मरी चकबन्दी भई।

दौरति दौरति पाँइ पिराने पहुँचेन तइँ न ठीक ठिकाने
बाजी गर अस भोर लगावँइ मछरी खुदइ किनारे आवँइ
पटवारी भये मालामाल मरी चकबन्दी भई।

ऊँचा खेतु ताल मा पहुँचा ठेलुहन केर जाल मा पहुँचा
पेसकार तारीख बढ़ावें दस नकशारे और बतावे
कसाइन कै कुत्ता अस हाल मरी चकबन्दी भई।

कुछ गरीब इज्जतिउ गँवाइनि दुखिया खेती तहूँ न पाइनि
पेसकार मिलि हबस बुझाइनि डाली उप्पर तक पहुँचाइनि
अस फैलाइनि जाल मरी चकबन्दी भई।

बहुत बढ़ारी भुँइ पर बइठे चतुर सिआने घूमँइ अँइठे
सी.ओ. ते ए.सी.ओ बत्तर ख्त्ती मा रिसवति की पइठे
हँइ किसनऊ हलाल मरी चकबन्दी भई।

रिसबति दइ किसान हँइ खाली डाकू दुखी लुटेरे सोंचँइ
राखिसि रंच न हइ चकबन्दी थाने निसुसँइ खम्भा नोचँइ
रहा बूड़ि मरइ का ताल मरी चकबन्दी भई।
मरी चकबन्दी भई।



मुशायरा

हँइ होइ लाग कवि सम्मेलन सब नगर भक्षिकन मा जब ते
कुछ दिन मसोसि मन रहे मुल्ला चलि परे मुसैरा हँइ तब ते
यू मानिति ना उर्दू भाखा बसि इन मुल्लन की भाखा हइ
ई आपनि बपदाई जानै यू कब ते इनका ख्वाखा हइ

आनन्द नरायन मुल्ला हँइ, हँइ जहाँ ठाढ रघुपति सहाय
चकबस्त कि जिनके आगे सब ई मुल्ला लागति लल्लबाय
इनका निकारि या तउ किरतन या मासूकी कै झगड़ा हँइ
कुछ उरझे जीवन के मवाल वाकी लटका हँइ रुगड़ा हँइ

हमहूँ देखी का होनि हुँआ यहि बदि सझैं लौखे पहुँचि गयेन
देखेन मुरगा चिचिआइ रहे लखि लाल परी डेरभुते भयेन
दुइ सायर जिनके साथे मा दुइ लौंडा देखेन गोर गोर
अद्धी अस पहिरे टहलि रहे नग जड़ी अँगूठी पोर-पोर

कोउ कहइ सरग कै गिलमा हँइ मायर संघइ मा डोरिआये
कोउ कहइ नौगुड़ा चेला हँइ ओस्तादन का हँइ पछुआये
हइ सायर वहु जो छाँड़ि लीक कुछ नये ढंग का अपनावै
जो हइ तेली का बैल कवितई के न भूलि वहु ढिग आवै

सागिर्द धरम अउ विद्या मा कवितई न गुरुडम का मानँइ
सायरी न जानइ दुनियाँ का बसि आपन अन्तरु का जानँइ
सायरी नहीं हइ गोट एक सायरी न खेल खेलौना हइ
सायरी जहाँ पर ताकि रहा जगदीश्वर बनि कै बौना हइ

कोउ पहिरि शेरवानी आवा लटकाये लम्बा जार बन्द
कोउ सुरमा काने लगु ओंगे तुरक टोपी पहिरे बुलन्द
बातन ते मिसिरी घोटि घोरि बसि उर्दू की जय जय बोलैं
कोउ घड़ी साज कोउ जिल्द साज मुल कथा नवाबी की खोलैं।

कोउ बेंचि कबाबु रहा देखेन काँधे पर बगुचा होउलि कोउ
कोउ मोटर क्यार मकेनिक हइ कोउ चिन्या बेंचइ सायर सोउ
कोउ खड़ा कचहरी मा दिनु भरि दइ नालि पुकार लगाइ रहा
हइ बहुउ सायरन मा बइठा जो बेंचि पतंग कमाइ रहा।

कत्था चाटै चूना चाटै ना कबहुँ दतोवनि करि पावैं
हाथन मा उगिला पान लिहे बइठे मंचन पर मुँह बावैं
कौनउ का चाय के कुल्हड़ मा मचइ पर थूकति हम देखेन
कौनउ की पीक चुई उप्पर गफलनि मा चूकति हम देखेन।

कुछ बिरहाकुल हुइ रोउ रहे बनि उनके यहइ सामरी रह
कोउ प्रेम पत्र अस बाँचि रहा हाथे मा लिखे सामरी कुछ
दुइ चार नजम अउ गजल छाँटि कछु और न जीवन मा गाइनि
नाजुकता का या मुलकन का या नी औरतन का अपनाइनि।

कुछ बीचइ मा चिल्लाइ परैं जो बाढ़ दुबइ मा बनि बइठे
सायर ते बढ़ि के भरथु काढ़ि सबदन के सागर मा पइठे
कुछ झूमि रहे कुछ उनाति रहे कुछ नसावइ बनि बइठे
कुछ भूसा के उप्पर बछरा की खाल चढ़ावइ बनि बइठे।

दुनियाँ का सबते बड़ा बनाइनि संचालक बड़िका सायर
बहु आवा माइक के समुहें जस कौनउ होइ बड़ा सायर
आपुस मा छीठाकसी करैं कुछ आपै बनि कै अंगकार
बीबी का टूटी साइकिल कहि सौहैं सटकावैं धूँआधार।

कुछ ऐंचा ताना गाइ रहे जसि तुकबन्दी के चक्कर मा
पढ़तइ आधा पन्नाल रहा जिउ हमरउ फँसा कुचक्कर मा
चिल्लाइ परे सब फेंकरि परे यू सबते नीको सेर कहिसि
हइ रहा मुसलमानन पर जो बसि भारत मा औरेर कहिसि।

...राम मिश्र

गाइन अस देखेन।

बहु कहिसि की आपन देसइ मा यू लागति आजु पराये हन
हइ लरिकन अस आदति हमार हन खाये मुल अनखाये हन
कोउ एकइ सेर पढइ फिरि फिरि भरि भरि अलाप मुँह बाइ बाइ
कहुँ ऊँची करइ अबाज और कहुँ भिनकि सुनाबइ सुर दबाइ।

पानी मा भीजि डबलरोटी अस जिउ सब श्रोतन का हुइगा
कुछ टुकडा रहिगे बीडी के कुछ कुल्हड़ और न कुछ छुइगा
हम पल्लूझार कथा सुनिके हन अइबे बदि पछिताइ रहे
जइ बहुत जुगाधिन ते एकइ गाथा गजलन मा गाइ रहे।

●

दोहे

धरम बीज हइ खेत का राजनीति हइ अन्न
एक भ्रूण हइ कोखि का छकि पय दूजा टन्न।

वर्तमान की चाह हइ राजनीति की चाल
धरम ग्वाट अति दूर की स्वारथ औरु बबाल।

मानुष भुँइ पर आइ कै जब सोचिसि बहुकाल
अटल राजि की बदि चलिसि, सम्प्रदाय की चाल।

कहि के खतरा मा धरम पण्डित काढ़ै काम
करौं गारि बलफै धरम, धरमी नमक हराम।

जब लौ खतरा मा धरम मठाधीश की सान
आगि लगावहिं अन्यथा हरहिं सुमति कै प्रान।

राजनीति या खल-धरम हुंइ कलजुग कै सस्त्र
मठाधीश नेता दुऔ बिन इनके निरवस्त्र।

साँचे साधु न आइहैं राजनीति कैं गाँउ
जानि बूझि को डारिहै इन कटिन मा पाँउ।

सहज भरोसा नकल का हुलसै बुद्धि ललाम
आपनि राह बनाइबो बड़ो सयानो काम।
सरी लासि अब धरम की ढोवँइ मुल्ला सन्त
कहूँ निसाना हइ लगा हइ निगाह कहूँ अन्त।
माया की जकडनि यहै पकरि न छाँड़ै गेह
रहइ काहिली संग लइ मोह दर्प सन्देह।
धरमी की संगति भली औ बरगद की छाँह
बखरी चौड़ी राह की, वर विवेक की बाँह।
पुलिस कबी अउ टहलुई बूढ़ी होइ छिनारि
इन चारिउ ते भूलिहू ना करिअउ तकरारि।
राह होइ परदेस की तम बरात या मार
सेवउ नहीं एकन्त का हर जवान जो नार।
बैस जवानी संग तिय और नसेड़ी बान
होइ पुजारी अस जहाँ हइ आफति की खान।
परइ कचहरी फग मा अउ सराब की बानि
होइ कर्ज को खाइबो गयी मनौ कुल कानि।
बौडम मधुपायी जहाँ बँधइ मरकहा बैल
नारि कुलच्छनि पाँव रिपु भूलि न पकरौ गैल।
साथ साथ जुग के चलइ बहै मनुज हुशियार
जो जुग के आगे चलइ सो जुग को सरदार।
समय-समय की बात हइ मित्र शत्रु नहीं कोय
जौन पतुरिया की दसा राजनीति की सोय।
चिरजीवी वहु कवि रहा वहै भवा सरनाम
मारिसि घर का लात कहि चूल्हे मिआँ सलाम।
बिना जगाये न जगैं सोवँइ लम्बी तान
दास-छात्र बदि नींद असि भला करैं भगवान।
छेड़इँ लरिका चित्त मुल कहर न उनका कोय
लरिकिन का बदि कै कहइ पुरुष वर्ग अस होय।
अदिमी केतनौं हूँ करँइ निन्त घिनौने काम
नारि रहइ संकोच मा तबहूँ नित बदनाम।

मिश्र

माथेन जस देखेन

मिलइ बात बाला कहूँ उअसा नातेदार
मूरख होइ दहेज की जौन करै दरकार
भुँइ पर आसा की बसइ जह मानुष की जाति
जगति रहइ उलझन बुनइ होइ दौस था राति
पूजा करउ करोर तुम सुख ना पइहौ भूल
जब लौं मन ना रोकिहौ यह पूजा की मूल
ज्ञान गैस की रोशनी बुद्धि नर्तकी मान
नृप समाज दस इन्द्रियाँ यहु रहस्य को जान
उचकि चलइ बोलइ मधुर सोभन गोरी देह
आँखिन बाहेर करिअई भूलि न लावउ गेह
यार मदकची कवि कबौ दूरी ते न डेराँइ
चुल मेटइ की बदि अपनि नदी पैरि के जाँइ
जानि लेइँ मिलिहै अगर रोटी साँझ सकार
कामु निकम्मा ना करै सोवँइ पाँउ पसार।
कुछ मानुष कै भेस मा घूमि रहे हैं बैल
बेमन कुछ करिहैं नहीं मन ते खोदिहैं सैल
भट्ठी दहकै धरम की चुरै नीति की दारि
राजनीति की लौंडिया धरमा धरै उतारि।
सुअरी अस जनता चहै मरि मरि के चिल्लाइ
कामु न नेता आइहै अनखाये अनखाय।
अंगस बंगस पाँउ अरु देखउ श्यामल गात
जौन कहइ चुप हुइ सुनउ सुखी रहउ दिन रात।
पुलिस मोहकमा मा सदा जातइ परिचय देउ
नइँ तउ गारी खाइहौ लइ सहपटही टेंउ।
लरिका नित भूखेन मरँइ दुलहिन काटइ रोय
चन्दा ते कफ्फन जुरइ असिल ससबी सोय।
सभा या कि दफतर कहूँ सोचि समुझि कै जाउ
सिटिर पिटिर मा जो परेउ कर मींजि पछिताउ।
ठकुर सोहाती बदि कहउ काम परे पर बात
नाँहि त घर बइठे रहउ करम कोसि दिन रात।

गुन प्रकटाये ही बनै औगुन राखौ गोय
पीटि ढिढोरा जो सकइ चतुर गुनी हइ सोय।

बोल बोलक्कड श्याम रंग मोटी घीच लखाय
उप्पर ते जो पेटु बड़ समुझौ कुसल न आय।

अधिकारी ते यदि मिलउ पहिले जानउ टेउ
संक्षेपण रसमय अगर तुरत सफलता लेउ।

दुइ जातिन के जोग ते अगर जो जातक होइ
या तउ कुल दीपक बनै या कुल देइ डुबोइ।

जानि सकै को नर समय, कब बनि जइहै बात
निज विवेक का राखि कै करौ दोष पर घात।

सीखइ सुधरइ यदि नहीं कबौ होति हइ देर
भोर भये निशि बीतिहै पुनि छँटिहै अन्धेर।

अगर बड़प्पनु और का तुमका अंगीकार
आँखिन ते परदा करौ यहु घूँघट का सार।

घूँघट हीन असभ्य नँहि सभ्य घूँघट माँहि
व्यउहारन ते मेहरुआ सभ्य असभ्य लखाँहि।

राजा मन्त्री बैद अरु मित्र अगर मिलि जाइ
पीर बताये ही बनै बाढ़ै बिपति छिपाइ।

जो न कबहुँ चोरी करै खुद ते अपन विचार
वहै सराहा जाति हइ जगदीश्वर कै द्वार।

तेल खून की रारि मा मानवता अकुलानि
फिरि फिरि पकरिसि नर वहै महायुद्ध कै बानि।

आपन मत जग पर लदै यहै युद्ध कै हेतु
भला करिनि कब भूमि का कहउ राहु औ केतु।

जड़मति सुत ते हइ भला सदा निपूता बाप
दुख बउनै सब जगत कै बड़ा गेह परिताप।

पाथर ना बौड़इँ बढ़इँ सींचउ लाख करोर
धुआं होति कब हइ जलद नाहक करिहौ रोर।

मिश्र गायेन जस देखेन |

जसमति ते सुजा मला कथइ भागि कै दोष
परजीवी हइ एक तउ, अन्य भिजारैं कोष।

राउ चाउ मा दिनु कटइ सनकइ जइसे बैल
लुसि कन्या बातइ सुनइ नसैं समूचा गैल।

मुरची पर को बैठिबो अउ मँगिबे की बान
एक दिन रारि कराइहै सुमुखि गवँइहै मान।

एकतउ दोसरि और पुनि होइ चमकनी नारि
घीच धरे घूमइ मनौ नर नंगी तरवारि।

चुगली चाइ नित करै बाला राखइ बात
चीरि भीर पहिले लड़इ मुसकी मा उतपात।



कुण्डलियाँ

खोटा सिक्का सहज गति चलइ चलन मा रोज
राह चलति अति भलेन को घिसि घिसि मेटइ खोज।
घिसि घिसि मेटइ खोज न नीके अब रहि जइहैं
आपन चारिउ वार निरखि जब खोटे पइहैं।
होइ झूठ या साँच अकड़ ना चलइ बहुत दिन
ठौर ठौर जब काँच पाँउ की भलगति पल छिन।।

पलई सींचे ना बढ़इ पादप कबहुँ अशोक
पानी मा छाया निरखि उड़इ रात दिन कोक।
उड़इ रात दिन कोक न सांची कोकी पइहै
जब लौ भ्रम करि दूरि अपनवौ ना बिसरइहै।
अहै ज्ञान की बात न जब लौ स्वारथ जइहै
मारग अन्टइ सन्त दुखित मानुष अपतइहै।।

बगुला ते वत्तर बने चलैंइ हंस की चाल
डोली तर छिनरा भये बिपति भई ससुराल।
बिपति भई ससुराल वहू संकट मा परि गइ
रंच न साबुत बची दारि बटुली मा जरि गइ।
धीर धरौ मत्र लोग लौटि अब बहु दिनु अइहै,
भलमंसी कै बीज न कहुँ खोजे मिलि पइहै॥

रोला।

स्वारथ पकरिसि जोर क्रोध की भड़कइ ज्वाला
घेरिसि हिंसा गेह अघी गज हइ मतवाला।
मिला न खोजे पन्थु बढ़ा औरइ अँधियारा
हारि गवा सब ठौर जौन नर मनते हारा॥

●

कुण्डलियाँ

पेन्सलीन जानइ नही ऊँच नीच व्यवहार
सबका एकसै गुन करै बाह्मन डोम चमार।
बाह्मन डोम चमार एक सबके हित बाड़ी
चली अगर तौ चली नाँहि बीसन सर ठाढ़ी।
चहउ सुमति मन माँहि लीक पकरउ विज्ञानी,
करउ शक्ति की खोज शक्ति हइ अवढर दानी॥

कविताई उर जोरि कै भरइ काठ मा प्रान
तनातनी स्वाहा करइ, दूरि करइ अभिमान।
दूरि करइ अभिमान न कविता भित्ति बनावै
छन्द और परबन्ध, चहै जेहिमा चलि आवै।
ढाँचा या तुकताल, हइ यह कौनउ वाद नहिं
उर कै सुधा बानि, अक्षदारी अनुबाद नहिं॥

रोला

शक्ति न दीजउ भूलि बाँदर का विज्ञान की
नेता यहिका पाइ राह दैंइ समशान की।
पीठी पर का घाउ मुला कप्पार म सेंकँइ
राजनीति की आगि फरी बगिया मा फेंकँइ ।।

गिरि परिहौ भराइ मोट गरुई उठाइ कैं
हुइहौ पागल बादि शान झूठी बनाइ कैं
कहौ वहै हौ जौन न आगे चलि पछितइहौ
झूठे बनिहौ हस उघरि कै बहुत लजइहौ

वहै बना भगवान जो न खटा मँझधार ते
सुखी किनारा पाइ दूरि भवा हर बार ते।
ढोइसि बल्ली बाँस बिछाइसि दरा उमिरि भरि
बना आजु लौं दास नरक मा वहै रहा सरि ।।



कुण्डलियाँ

मछरी चिन्तन कइ रहे सब विभाग यहि काल
नेता हाकिम छोट बड सबइ भये घरियाल।
सबइ भये घरियाल टोंट बगुला अस मारैं
नोचँइ भूत भविष्य देस गड़हा मा डारैं।
कारन यहै देखान भले का बदलिसि खोंटा
फरे बड़कवा बिरिछ भवा मरकिचिया छोटा।

नारा बाजी चढ़ि बजी दाबि साँचु कै बानि
काँच केर टुकडा भये बफ़लि रतन धन खानि
बफलि रतन धन खानि न पाइनि रंचउ बोइ जन
हड्डी दिहिनि सुखाइ गँवाइनि जो तन मन धन
काजर लिहिनि निकारि भये दृग उबली घुइयाँ
नेता भरवे बक्त न मुख बरसाइनि फुइयाँ

चतुराई भलि जगत मा जो मतलब भरि होइ
राजि पाटि लरिका गये चतुराई मा खोइ।
चतुराई मा खोइ भये धृतराष्ट्र घिनउने
हाथ रहा पछिताउ अति चतुर मानुष बउने।
सुतरमुर्ग मरि जाइ गाड़ि खपड़ी मट्टी मा
कौआ चतुर कहाइ टोंट मारइ टट्टी मा।

गिरइ केरि सीमा नही उठिबे को नँहि छोर
शक्ति अपरबल मनुज की सीमित खग मृग ढोर।
सीमित खग मृग ढोर नींद अउ भूख बुद्धि बल
परवस धारे प्रान न राखँइ रंच कपट छल।
जह मानुष की जाति विधाता थाह न पावै
सहै कोख की पीर और खुद का उपजावै।

•

कवि सम्मेलन

रुपिया पइसा ते अरस भये कुछ व्योपारी हिलि मिलि बइठे
ठेलुहन का चही मनोरंजन जो गँसि कवितई मा पइठे
तुकबन्द भये दुइ संजोजक कवि सम्मेलन मिस लगी घात
बनि गई कमेटी और भवा चन्दा अघाइ फिरि अकसमात।

संजोजक रहँइ सियान जौन बोइ चिट्ठी पत्री डारि दिहिनि
कवि माँगि लिहिनि बीसन हजार बटिया चन्दा की पारि दिहिनि
तनि मोल भाउ करि आठ जने सम्मेलन मा बोलवाये गे
अउ एक मदरसा मा सब कवि फिर भली भाँति ठहरायेगे।

दुइ जने मुला लरिकी जवान देखैन सास्थै मा डोरिआये
पूछेन तउ बोले कवयित्री हम कियेन खुशामदि हँइ लाये
कोइ अलग थलग कमरा चाही जेहिमा जह लरिकी लेटि सकै
सब लाज सरम अउ धमकच्चकड़ अठलक्कड़ बिना समेटि सकै।

तब अलग अलग फरमाइसि भइ कोउ दूधु गुनगुना कोउ पानी
कोउ काफी कौनउ चाय पिहिसि कोउ बलफिसि अपनि हैरानी
कोउ छानि भाँग झूमइ बइठा खइनी खाये रस चूसि रहा
कोउ बियर पिअइ कोउ रम भिसकी कोउ गरम समोसा ठूँसि रहा

तन माटी का जिउ मस्ती का पछितांइ सरग तुलसी कबीर
कुछ का मन अटका बोतलमा कुछ हुँइ अफीम की बदि अधीर
बेतुकी छेंड़ जेहिते तेहिते हुइ धुत्त नसा मा करइ लाग
भीतरैं भीतर जब सुरा चढ़ी तउ काम अगिनि अस बरइ लाग

सब की गइ बुद्धि हेराइ मंच पर गये झूमतै झामति फिर
कविता के बदले चौबोला ना और रही औचापति फिर
कुछ एकइ कविता लौटि पौटि कुछ नवा बदलि के गाइ दिहिनि
कुछ आँखिन ते कुछ हाथन ते कुछ कूदि फाँदि समुझाइ दिहिनि

हुइ गये तीस लगु बरस न बदली उनकी एकइ कविता हुइ
कुछ जोड़ तोड़ कइके निन्तइ हिन्दी मंचन के सविता हुइ
परिवर्तन का जग पुतरा हुइ इनकी कविता हुइ ज्यों की त्यों
जूता चप्पल लगु जाँइ बदलि मुल जह् अग्गासे की अस बौं।

भोंपू कुल्हड़ हुल्लड़ हुक्का सनकी बौड़म कवि साँड़ भये
जब कविता ते न हँसाइ सके तउ बने बिदूषक भाँड़ भये
कोउ महापुरुष का दइ गारी कसिकै हुल्लड़ मचिआइ रहे
कोउ करुण कहानी कै प्रसंग चिघाड़ि दहाड़ि सुनाइ रहे।

रेशम मा बोरा की चकती कवितई भाँग की पुड़िया हुइ
कुछ कवि हुँइ जिनका छुटपन ते बसि कविता की नँहजुड़िया हुइ
कविता कइके रहिहौ निरोग हुइ बैद दिहिसि कौनउ सलाह
कवितई बिना जइहौ घिनाइ गैतल बनिहउ हुइहौ तबाह।

कुछ सबद जोरि तिगड़म के बल केवल जइ नित मंचन पर गाइ रहे
दिन दूने राति चौगुने जइ मुल असिली कवि मुरझाइ रहे
कोउ कहइ कि प्रेम प्रसंग कहौ कोउ कहइ कि चुप्पे बइठ रहौ
तुम अन्त सन्त बेलना [illegible] कोमल ममता मा पइठ रहौ।

आपनि चठिया मा डोलि रहे सब आपुस मा जय बोलि रहे
उल्लू घुघुआ इक दूजे की तारीफन मा रसु घोलि रहे
कुछ जेसी और रोटरी के बनिये व्योपारी मिलि आये
संघइ मा आपनि मेहरारू लरिका लरिकी सब डोरिआये।

कोउ बासी अखबारी भाषण तुकबन्दी किहे सुनाइ रहा
कोउ सम्प्रदाय के कीचड़ मा कविता का खैंचि बहाइ रहा
कोउ सूथे सूथे ललिहाउज करि रहा देस के नेता का
कोउ खद्दर का घिनबाइ रहा कोउ ओरि दिहिसि अभिनेता का।

काहू कै कविता और नहीं हिन्दू मुसलिम की खाँई हइ
टी० बी० बी० बी० लौ काहू की कविताई चलिकै आई हइ
कोउ ओढि लबादा हिन्दी का आपनि बिल्डिगैं बनाइ रहे
नरकउ मा मिलिहै ठौर नहीं बजरी जो देस कराइ रहे।

कोउ भाउ बिना भरि भरि अलाप सुरताल बनाइ रिझाइ रहा
कोउ अंइचा ताना जोरि जारि हइ गरा दबाये गाइ रहा
जइ भाखा के परचारक हुँइ लरिका कनवेन्टी ज्ञान लिहे
ई चमड़ी ते करिया हुँइ मुल भीतर अँगरेजी जान लिहे।

जइ हुँइ कविता के व्योपारी नित बेंचि रहे ईमान धरम
मइले अस भये चरित्तर हुँइ हिन्दी के फूटति जाति करम
कवि रंडिन ते बत्तर हुइगे जस चहौ राति भर नचबावउ
इनकी पइसा ते यारी हइ चँहि सुनौ याँ कि मुँह मटकाबउ।

रंडी की कीमति पाँचइ सौ बसि राति भरे की दुरगति के
जइ चारि हजार उगाहि रहे मंचीच जोकरी कीरति के
हुँइ मंच ताल कै जइ नीरज जेहि भाषा मा पाइनि गाइनि
लटके कब ते बनि कै त्रिशंकु कौनउ भाषा ना अपनाइनि।

बिन नोये लगनी गइया अस जह कविता बडी दुधारू हइ
हुइ रही करामाती मलिहम या नकली ढोला मारू हइ
दुइ चारि पाठ के बादि मंच की कविता होति पुरानी हइ
जह संयोजक की मिली भगति जह जनता की नादानी हइ।

हइ होति सहालक इनहूँ की खाली तौ कौनउ रेट नही
मानुष हइ कविता का सन्टर जेहिते कौनउ विधि भट नही
टायम सब सफरै मा बीतइ साधना होइ सब गाड़ी मा
ना कविता कबहुँ सुनाइ परै इनकी धडकनि मा नाडी मा ।

जब सम्मेलन हुइ गवा खतम रुपियन की धमा चौकडी भइ
कोउ रूठि चला कोउ लिहिसि बाढि मूड़े ते आँखी तगड़ी भइ
निसुसैं असिली कवि कोने मा सोषण सहि सहि गहि रहे मौन
अब तौ दादुर बोलिहै मंतर तुलसी बाबा की सुनै कौन ।

हुँइ माल-हिरन कै आखेटक कुछ घिसे पिटे कवि बेरि बेरि
कब सुनिहौ कवि की तान मुला माता कानन का तुम उटेरि ।



अइ ग्वाला सब इनते मात

रंच न दूध के डब्बा भटके
हैंडल के खंदनन मा अटके ।
पाछे दुअउ ओर दुइ बाँधे
सइकिल गरुई खैंचइ गाधे ।
भोर होत खन दूध बटोरैं
किलो निन्त चालिस लगु जोरैं ।
दुपहरिया मा शहर क आवैं
रकत पसीना एक बनावैं ।

यहै जिंदगी का हइ कोउ
तारकोल की पिघलइ रोड ।
दूधइ बेंचति कटि गइ वैस
दुखिया कबहुँ न जानिसि ऐस ।

चोखाना का तहमद बाँधे
पेटु खलाथे लगैंइ बिआधे।
हलबाइन ते यारी होइ
लगनी भैंस दुधारी होइ।
फटइ दूध ठाढी तकरार
गद्दर मुसकी व्यंग हजार।

गाँउ भरे मा करि नेउताइ
बोर्ड झारें लौंग बनाइ।
दन्द फन्द मा जइ हुशियार
हरि अक्किलि के दावेदार।
बीडी चिलम जहाँ मिलि जाइ
जिउ हुलसइ मन मोदक पाइ।
बड़ी दूध ते इनकी बात
जइ ग्वाला मब इनते मात।



ओ ओटर भइया

ओ ओटर भइया हमने न रिसबति खाई।
स्वारथ मा अफसर ना माने
हमरे अड्डा बनिगे थाने
करेन बहुत हम नाहीं नाहीं
बेइमानी कीन्हिसि गलबाँही
खिरकी डगर हमारे पाछे घरमा डाली आई।
तिकड़म की चौमासी गंगा
चारिउ बार मिला नर नंगा
बोले गल्त अगर ना करिहौ
तउ अगिले चुनाव मा हरिहौ
डूबि जाइ की खातिर कइसे उल्टा नाउ चलाई।

जइसेइ जीप ते बाहेर आयेन
चापलूस कुछ ठाढ़े पायेन
बेग लिहिनि हाथे मा अपने
पूर भये बसि उनके सपने
दलालन केरी खूब भई ठकुराई।
जौने दुखिया दरा बिछाइनि
दौरि धूपि के राजि देवाइनि
दुइ धक्कन मा पीछे रहिगे
मेहनति नीति धरम सब बहिगे
पाँच लाख जब खर्चु करी तब हम एम.पी. हुइ पाई।
जब मंत्रिन ते कामु करायेन
बिना चौथि के पार न पायेन
लरिकी का बिआहु कइ डारेन
साठि हजार गिफ्ट मा मारेन
काहू ते माँगेन ना कबहूँ कहौ त कसमैं खाई।
ओ ओटर भइया।

●

डाकुन की बनि आई

कौनउ पिछड़ा बरगु लिहे हइ
सरग लिहे अपबरगु लिहे हइ
लिहे प्रबद मा समता कौनउ
अउ जनता बदि ममता कौनउ
झूठ मूट पंजाब कि कौनउ हाथ लिहे अगुआई।
कौनउ हइ माफिया सरगना
राजि बनी मूरख का सपना
लिहे बाबरी महजिद कौनउ
जह जिद कौनउ बहं जिद कौनउ
केहिका व्वाट देइ अब जनता सब की मति चकराई।

जातिवाद कै समीकरन मा
अउ स्वारथ के वशीकरन मा
कौनउ लिहे कमंडल घूमइ
कौनउ लइके मंडल घूमइ
मँगरेलइ केहिका अब जनता डाकुन की बनि आई।

कोउ इमाम का नित्त पटावै
अल्प संख्यकन का भरमावै
कौनउ राम रहीम क ज्वारइ
कोउ रहीम ते नाता त्वारइ
चारिउ वार देखान यहै बिध हमका ठाढ कसाई।

देखि रहे सब आपनि कुरसी
जनता केरि देह हइ झुरसी
हँमइ बिदेशी घाउ दइ नवा
रोग और कुछ और हइ दवा
छाँउ फेकाँउ यहै रातौ दिन का कहि ग्वाट बनाई।
डाकुन की बनि आई।

●

देहाती बाबा

धूरे पर भिठिया कै तीर
बहइ महकुई जहाँ समीर।
बाबा एक गाँउ मा आइ
लइनि फूस की कुटी बनाइ।
मंठा दिहिसि और कोउ बाँस
बाबा की पूरन भइ आस।

भारत के तिरथम का हाल
सांझ सवेरे कथंइ सुकाल।
आंटा पावंइ ठिक्कर सेंकंइ
बिना बात की बातइ फेंकंइ।

देर राति लगु चठिया जोरंइ
चिलम मदक के रस मा बोरंइ
छोलि अगौरा जो सहुँताइ
पी कै घरइ तमाखू जाइ
लटइ धुआंनी बिनठे बार
हइ चिमटा इनका हथियार
गुँगुआनी आँखी दुइ गोल
खैंचि निकारंइ मुंह ते बोल
चमत्कार कहुं देइं देखाइ
बनंइ ठढ़ेसुर औसर पाइ
गाँउ भरे का नित उठि जान
कुछ नउमुड़ा बघारंइ मान

जाड़ेन भरि धूनी का तापंइ
भसम लगावें बादरु नापंइ।
बरइ चिलम जिनकी ना लम्प
हँसी उड़इ तिनकी बनि गप्प।
कौनउ रसु इनका दइ जाइ
मई और घोउना हइ चाइ।
इनके वदि अगरासन बाढ़ंइ
उनके लरिका जुग-जुग बाढ़ंइ।
फूंक डराबंइ होंइ बेराम
बाबा रिक्सा मा सरनाम।
उल्टे सूधे भजन सुनाइ
मेहरारुन का लेइं रिझाइ।
कहंइ कबीर सुनउ भइ साधौ
सब बाबा का मिलि आराधौ।

●

दोहे

दकियानूसी मा परो सम्प्रदाय की जौन
बहुत काल लगिहै नहीं नसिहै कुनवा तौन।

सम्प्रदाय की बानि हइ नित भेड़िया धसान
अनुभव भिन्न, न हइ कबौं, आतम पंथ समान।

काम परे पर सोइबो अगर कुलच्छनु होइ
लछिमी जी गुस्सा रहँइ सदा कटँइ दिन रोइ।

नित्त फकीरन बदि चही मधुर बानि अउ सील
कपड़ा पूरे जगत कै बसि आतम की कील।

बादर मा बूड़इ अगर नखत लगति दिन सूर्य
बग्वा को बदि कै बजै तेहि पखवारा तूर्य।

हइ चरित्र बल हीन जो रहा कुलच्छनु ढोइ
हीन जगत व्योहार जो सदा अनादर होइ।

●

गरीबी न पापर बेलइ

सूखे सबै दिन ओंठ रहे
सिकुड़ा मनो खाल बहोरि चुकी हइ।
लेस ओ पोल दबाई बिना
रस प्रान को बात निचोरि चुकी हइ।
पाछे तपेदिक अइसी परी
सब घातन घाँच मरोरि चुकी हइ।
जीवन तार ते तोरि हमैं
जह गेटी सबै घट फोरि चुकी हइ।

देखति का हौ निहारि हमैं
दुख-देवता को सदा वन्दना गायेन।
खालिस नोन निरा मिरचा
सदा पानी कै घूटंन रोटी नँघायेन।
हुइहैं कहूँ बने राजा रथी
हम लउ लरिका मजदूर बनायेन।
कौन भवा जने पापु महा
कबौं आँसुन ते अवकास न पायेन।

दोसु बड़ा इन हाथन मा
छुइ जाँइ जहाँ बहु पाछे ढकेलइ।
लौकिउ जो कहूँ बोयेन तउ
गिरि गा छपरा जिउ की भई जेलइ।
साध यहै रही जीवन मा
कबौ खाइ अघाइ कै छोकरा खेलइ।
और सबै दुख आवैं भला
अब आइ गरीबी न पापर बेलइ।



नींद कहूँ कँकरीली जमीन पे

कान परा जहु एक दिना
मजदूरन के दिन लौटि के अइहैं।
लेनिन माओ के दूत अबै
जुग ते बिगरी जो हमारि बनइहैं।
मालिक हुइ मजदूर सबै
इन सेठिन का परबन्धु सिखइहैं।
लंघेन का लछिमी मिलिहैं अब
बैभव के उनैं साँप न खइहैं।

एकन केर उजायर हुइ सब
एम मरें भितरैं न जनावैं।
एक के आँसू बहैं सब देखत
एक बिथा मन मा उफनावै।
चिन्ता है एक की कैसे बनी चिता
दूसरे की चिता चिन्ता सजावैं।
पावैं न एक कबौं भलो भोजन
खावैं जो एक पचाइ न पावैं।

नींद कहूँ भजे फूल की सेज पे
नींद कहूँ कँकरीली जमीन पे।
हाथ कहूँ निशिवासर फोन पे
हाथ कहूँ रहैं आरा मशीन पे।
एक सड़े भये सेब से भीतर
बाहेर एक हैं कौड़ी के तीन पे।
हुंइ दुख देव दुओ पे लगे
जेतनो धनी पे ओतनो धनहीन पे।



मिश्र

गायेन जस देखेन

यहि ते कबहुँ न लड़िअउ भूलि

काजरु ओगइ बार सँभारइ
नखत तोरि कै भुँइ मा डारइ।
सहइ अजाने की मजबूरी
आदति नंगी खरी मजूरी।
जेहि पर तनिकउ जह दिक्काइ
भजति तुरन्तइ पुलिस क जाइ।
मुसकी मारइ अउ चिल्लाइ
भलमंसी देखे बिल्लाइ।
गढइ बात रोजुइ दुइ ढूंढि
रही जवानी दिन मा मूड़ि।

बड़बोली ना जग ते छोट
चिकनी बातइ लूट खसोट।
कौनउ यहिका मिलइ न अन्त
थर थर काँपइ देखे सन्त।
सुन्दरता की मूरति जानइ
खुद का सती कलजुगी मानइ।
का मजाल कौनउ कहि जाइ
लतमरुआ हुइ गारी खाइ।

पुलिस म तेहिका जाइ डँड़ावइ
आपुस मा गुंडा लड़वावइ।
रंच न यहिकी जग मा मीति
फेना अस हइ यहिकी प्रीति।
धन का टबका अईस निच्चारइ
देइ न पैरइ बिलकुल ब्वारइ।
सब ते बाला यहि की बात
यहि ते हइ परमेसुर मात।

जो यहिकी तन तनि समुहाइ
हुइ चहला की ईंटइ जाइ।

जौन लड़ै पाछे पछिताइ
जब लौं जिअइ जिअति मर जाइ।

लुकुरी फूस के जौरे केरि
बूढ़े बिधुरन केरि महेरि।

गुन्डन मा गुण्डा सरदार
आह भरँइ मुछ मुण्डा यार।

पास परोसी सबै डेराँइ
करँइ डंडवत अउ हटि जाँइ।

अनखतरी धावन की धाव
ओंठ बनावइ पाये दाव।

अस्त्र दलालन का मजबूत
यहि का बलु तुम गिनउ अकूत।

भोर बिलोकइ तौन घिनाइ
और छुये दुइ बेर न खाइ।

यहि ते कबहुँ न लड़िअउ भूलि
नहीं तौ तुमका देहइ हूलि।

भुँइ माता

चन्दा मामा की करनी अब लगु तुम हमैं बतायेउ
अब भुँइ को हाल बताबउ जस कालिह हमैं समुझायेउ
अग्गासे मां न उडति हुंइ कस जीव जन्तु पर ठाढे
कइसे अवनी हइ बाँधे सब बँधे नेह मा गाढे

नसते परलय के जलमी तब समुझाइसि महतारी
हइ बारिधि बाप की बिटिया अउ अहै सम्भु की सारी
बिसनू भगवान की लरिकी हइ सूत मूल ते पहिले
सुख देइ सकल प्रानिन का खुद झेलि रही दुख अहिले

नित रहि रहि महक उड़ावै कइ सूरज की पइकरमा
महतारी की महतारी जह गाइ प्रभू कै घरमा
बछरा गिरिराज हिमालय जो बचै दूधु सब बाँटै
राखी बँधवाबइ को बदि चन्दरमा चक्कर काटै

चहि जेतनी चलैंइ कुल्हाड़ी चहि जेतना चीरैंइ फारैंइ
चहि खोदैंइ चहलैं पाटैं चहि जो धमकच्चरु डारैंइ
मूरित मुल एक छमा की जह नित्तइ लगनी गइया
जह देइ सँदेसा सबका माँगइ जह जग का भइया

अपने तन सब का खैचइ जह जलम लेति बैठरइ
लखि भाँति भाँति के लरिका ना जह कबहूँ मन मारइ
पतझर मा बनि के बुढ़िया जग का निरबेदु पढ़ाबइ
बनि मधुरितुमा महकुइया अभिनव सिंगारु सजाबइ

सब भाँति भाँति के सपने जस जौन वहै बिधि देखइ
नित पाठ नेह का दइ कै सुख जिअइ यहै बरु लेखइ
सीता माता का धारे दुख जनम जनम कै टारैंइ
जप जग्य होइँ तउ पब्वित्त धरती कै पाँउ पखारैंइ।

पाथर मा प्रान लुकाये गौतम तिय रहइ बिचारी
रज बनी राम की मंझुआ पाथर ते कीन्हिसि नारी
भुँइ जौन फूल उपजाबइ पहिरइँ नर उनकी माला
बलि पन्यिन का पहिरावै सोषण का काढ़ि देबाला।

जब मानुष भौंरी डारइँ भुँइ आशिर्वाद लुटाबइ
लरिका लरिकिन बदि अपनी छाती दिन राति कुटाबइ
हइ अन्न धन्न की जननी मानुष के करम थली है
जह हइ असिली महतारी अउ ममता की पुतली है।

जब पाँउ छुअइ चन्दरमा रोजुइ दरबाजे आबइ
आँखिन का काजर बहिनी अनखा मिस भाल लगाबइ
करउँट लेतइ खन छिन मा दुख बाँटइ हाला डोला
तब खण्डहर केर सुरन मा गाबइँ परेत चौबोला

निज पूतन की उन्नति ते कबहूँ ना हिम्मति हरिहैं
लुंजा लँगड़ा अँधरन का जिउ ते सनेहु नित करिहैं।

●

जइ कृषी समर के जोधा

बिरहिन के जिउ अस तलिया छाती मा चिटका आरइँ
जब सविता आगी उगिलइँ घामे ते खपड़ी फारइँ
श्रम देखि तुमारौ बिरवा हुटकटे रंच ना डोलइँ
देही ते चुअइ पसीना भुँइ के देउता रस घोरइँ।

तक तक बाँ बाँ बसि चीरइ दुपहरिया का सन्नाटा
ठउरइ पर ठाढ़ि उखारी मारइ दुख का दुइ चाँटा
मूड़े मा बाँधि अंगोछा हाथे मा लिहे पनैठी
जग का जो अन्नु खबाबइ सब लखइँ दीठि ते हेंठी।

बिन भूख पिआस जुटा हइ यू धरती का लासानी
खेतइ मा लाइ पिआवै मलिकिनि दुपहर मा पानी
गरमी जाड़ा अउ बरखा देहीं पर अपनि बितावै
जब बढ़ति फसल का देखइ रहि रहि जिउ का हुलसावै
बिल्लाइ पसू घामे ते तजि घास छाँह का भाजइ
खेती कै सिह मुला जइ मौसम का रौंदइ गाजँइ
जब शहरातू कूलर मा आपनि दुपहरिया काटँइ
किसनऊ पेट कै गड़हा लइ हाथ मठेई पाटँइ

श्रम की सम्पति के राजा बैलन का चारा डारँइ
सुरजन का फिरि जलु दइके पेटन के मूसे मारँइ
जब थमइ घाम भैसिन का गौंतलियन मा नहवावँइ
रुपियन की चाह निसाचरि घिउ बेचँइ माठा पावँइ ।

जो चहै लेइ करि इनकी झलकति पसुरिन की गिनती
खेतँइ हँइ इनके ईसुर श्रम की इकलौती बिनती
जइ देउता साँचे जोगी नित करम करँइ सुख पावँइ
जब घरी दुइ घरी बैठँइ बरखा मा आल्हा गावँइ ।

झींगुर झिल्ली झंकारँइ नेतन अस दादुर बोलँइ
छपरा ते पानी टपकइ रस और घरैतिन घोरँइ
जब खूंड़ लिहे जइ आवँइ शहरन मा बेचइ आपन
तउ जाड़ा गर्मी बरखा मारँइ इनका निज सापन ।

खुद बिकँइ हाट मा मद्दे मुल बेचँइ छुट्टी पावँइ
डल्लप होतइ खन पिन्चर राहइ मा राति बितावँइ
ट्रकटर ट्राली कै पुरजा बनबाउति समउ नसावै
मिसतिरी मजूरी दूनी इनका समुझाइ बतावै ।

हँइ बैंक खजाना इनकै कुछ दुकनदार सहरन के
उनकी बिजनिस के सोता बोइ नेता इन अँचरन के ।

जब देखँइ ई सब ठगुआ तउ कहँइ सेठ जी आवउ
आपन नौकर ते बोलँइ पंखा की चाल बढ़ाबउ
जइ हुँइ दधीच के लरिका इनकी हइ अजब कहानी
ना चलइ रितुन की इन पर हठ कइके कुछ मनमानी
जइ समउ भरँइ अँजुरी मा भगवानउ इनका मानइ
चीरँइ धरती की छाती पयु जानँइ चाह न जानँइ।

जब निकरँइ घर ते बहिरी तउ बैलि देखि हूंकारँइ
छुटपन मा उछरति बछरा पायेन मा झुम्मी मारँइ
दुइ पाँयिन पर हुइ ठाढ़े बकरा तब आँखी काढ़ँइ
लौकी कुम्हड़न के बिरवा छपरन पर बौड़ँइ ब ढ़ँइ
दोसरि हइ इनकी दुनियाँ फसलँइ हुँइ इनकी कविता
जइ कृषी समर के जोधा धरती के राजा पविता।

●

अइसे बना आधुनिक नेता

कक्षा दस मा पहुँचा लरिका जब सपलीमेन्ट्री आइ गयी
गुंडा गर्दी की चौखटि पर अगिली कक्षा पहुँचाइ गयी।
फस्टियर भवा रेस्टियर और पढ़िबे बदि नानी मरै लाग
सिटिया बाजी नेतागीरी परि के संगति मा फरै लाग।

घंटन का बाईकाट किहिसि घूमइ लागा जोरे जमाति
हइ ठाढ़ माढ़ चहबच्चा मा यह है कुसंग की करामाति।
बीड़ी सिगरेट सुलफा शराब धीरे धीरे रोटीन बनै
बसि देंहों मा हाड़इ देखान घूमँइ मुल छाती खोलि तनै।

कुछ सड़क छाप लरिकन ते मिलि नारा दुइ चारि लगाइ दिहिनि
फिर एक दीस घंटे अपनँइ मौकार का झिड़कि बजाइ दिहिनि
दादा हुइगे नेता हुइगे बिद्यार्थी छाँड़ि सबै हुइगे
आवा इण्टर का इम्तहान करिया अच्छर ना दुइ छुइगे।

यारााम मिश्र पायेन जस देखेन।

धमकाइ दुबरिया टिचरन क कइ खुली नकल हुइ गये पास
भइया बी० ए० मा पहुँचि गये लइके सिच्छा कै यहु बिकास
गाइडउ धरिनि मुल मिला नहीं कौनउ उत्तर जब ढूँढ़े ते
तउ कुछ औरन ते लिखबाइनि आँखी बड़ुखरि भँइ मूडे ते

जब छात्र संघ का बँधा जोर जइ अध्यक्षी मा ठाँढ़ भये
नेता गीरी की जुगति हेतु कुछ घाघ बने कुछ राढ़ भये
चढि गये दुकान दुकानन पर अउ लिहिनि हजारन मा बसूलि
होटल वाले माँगिनि पइसा गारी दस दइके दिहिनि हूलि

गाडी बस और सलीमा सब बिन पइसा के अपने हुइगे
परिवार देस औ' सिच्छा के बिन श्रम साँचे सपने हुइगे
जीतइ वालेन के संग भये जब जुरा चुनावन का मेला
जानति सब ना यू पार लगी बिन गुंडन के रेलम पेला

कुछ गरम रकत कुछ नरम रकत कुछ मार मार कुछ नरे नरे
हुइ यहु चुनाव का दंगल अस या हुंइ डाकुन कै दिन बहुरे
नेतन कै बनि के पिछलग्गू गठजोड़ किहिनि अगिली सीढ़ी
कइ रस्साकसी अलच्छन मा कुरसी मा लाइ धरिनि पीढ़ी

उनके विरोध मा जौन डटे दस बीस कतल करबाइनि फिरि
मिलिके हाकिम हुक्कामन ते आपन कब्जा भरबाइनि फिरि
अब लाज कूफ पहिदे कपड़ा हुइ गये कसाई कै कुत्ता
स्वारथ की भुँइ मा अनगिनती सोषण कै उगे कुकुरमुत्ता

बसि रहा जाति का समीकरन बाकी सब मुद्दा भये फेल
सिद्धान्त और आदर्श देस देखिनि छिन बित्तर माँहि रेल
साँपउ न सुंघि सकँइ इनका मुल जइ काँटइ तउ जहर चढ़इ
हुइ जीभ लिहे छुरिया इनकी संचन पर भाषण रोज गढ़इ

यू मानिति हम सिगरो तलाउ हुइ सका न हुइ अब हूँ गन्दा
मुल कमलन का मिलि दाबि लिहिसि जलकुंभी कै घोरख धन्धा
बिसवासु यहै हरिआई तौ पाथर कै नीचे दूब दबी
हुइ देखइ का मेवा बिसारि अब करैं सहिला कौन चबी

[सियाराम मिश्र

मसीन [illegible]

हुर नियम ज्ञान का अटल रहा यू नीचे ते उप्पर आवइ
जब आगी चारिउ वार होइ तउ को आँखी मीचे प.बइ
हिन्दुन की खालइ जइ सँइचँइ जब मुल्लन की जमाति पावैं
जब हिन्दुन की पावैं जमाति सूधे मुल्लन का गरिआवैं।

बातन का करैं बतगड़ जइ चींटी कै बिल मा करैं फार
मक्कारी पुलिस दलाली छल रिसबति इनके हुँइ चारि यार
हुँइ सबद सहृद लिपटे इनके विष मनौ दूध कै दाँत लिहे
हुइ दाढ़ी इनके पेटे मा ई अन्त हीन हुँइ आँत लिहे।

जइ धरम करम का घिनबाइनि रडी कइ डारिनि राजनीति
जइ पइसा ते वरु ठाँढ़ करिनि साँचउ कानो वरु लिहिसि जीति
जइ न्यायालय का हुड़बगँइ जइ अनुशासन का करँइ भंग
जइ हवामहल जइ उजरे तन जइ मइले मन जइ बड़े नंग।

बनिये व्योपारी अधिकारी सब स्वारथ मा पाछे घूमँइ
नेता समाज कै करनधार इनके चरनन का सब चूमँइ
दिन का जइ राति बताइ रहे जइ फरा फरा दिन राति चरँइ
भूखे पेटन पर मारि लात जइ निन्त गरीबी दूरि करँइ।

जइ भये खरोचनि कलजुग की जइ धँसी धरम की परिभाषा
जइ सपना गान्धी बाबा कै जइ भारत की उजरी आसा।

मास्टर हुइगे

गँवईंगाँवन के रहवैया कइ मिडिल पास मास्टर हुइगे
कुछ हाई स्कूल और इण्टर मुल अच्छर छर हुइ सब धुइगे
बर्धा भैंसिन की सघति मा जो यादि रहा सो यादि रहा
खेतो पाती के धन्धा मा मुल नित्त मदरसा बादि रहा

उठि घरे और हरे नाँदन पर पशु बाँधिनि अउ हरु मचिआइनि
दस बीस हराई जोति जाति दस बजे तलकु छुट्टी पाइनि
घर का लौटंइ देहीं भिजवंइ फिरि उल्टा सूधा भरंइ पेटु
दिन भरे केरि दिनचर्या अस जस कसा कुल्हाडी बीच बेंटु

जब गये मदरसा हफ्फि डफ्फि लरिकन ते बोले करौ काम
थकि गयेन बहुत हम घरहें मा आपन पढ़ि पढ़ि कै करौ नाम
बोलेउ तउ डंडा धरा ठौर दुपहर मा सरबतु लइ आयेउ
थोरेइ दिन रहे परिच्छा के नाँहित तुम जानेउ फलु पायेउ

फिरि काढ़ि चुनौटी जेबे ते अनमोल तमाखू मलइ लाग
दुइ चारि और मास्टर मिलि कै बातन के फागुन फरइ लाग
गइ बिटिया भाजि फलनवाँ की बन्धा की गाइ दुधारू हइ
हइ गाँउ भरे की राजनीति निन्दा की असिली दारू हइ

भा इन्टरबलु तुम घरे जाउ तब एक जने चिल्लाइ परे
कोरी पाटी पनिहाँ बोदिका सूखी कलमैं रहि गये धरे
दहगर्दा सरबतु दुइ लोटा चेलन के घर ते धुरि आवा
बिन पढ़े बनौ ज्ञानी लरिकउ यहु आशिर्वादु उतरि आवा

हँइ संसद मा पसरे एम० पी० नित नई नीति चलवाइ रहे
मुल हियाँ रसातल मा सिच्छक सिगरी सिच्छा पहुँचाइ रहे
ई भुखजरु ओढ़े इस्पेट्टर मोटर साइकिल ते आवति हुँइ
सिच्छा के मन्दिर मा लरिका उइ रोजु नदारद पावति हुँइ

जो बहुत करिनि इमला बोलिनि करि ठाढ पहाड़ा रटवाइनि
पाटी पर कइके कुछ गुटका विद्या कै गडहा पटवाइनि
जो इस्पेट्टर का मिले गुरू जइ उनकी जेब खखोइ लिहिनि
बिन किये धरे डिपटी का दइ सन्तोष करिनि सुख सोइ लिहिनि ।

कोउ किहे दुकान किताबन की पी कै शराब गरिआइ रहा
कोउ नेतागीरी मा घूमइ कोउ पुलिस दलाली खाइ रहा
कोउ बैठि जीप पर काहू की कइ रहा चुनावन का प्रचार
रोशनी करेजे मा गाड़े नित बाँटि रहा हइ अंधकार ।

हइ प्रगति भई कुछ इनहूँ मा जुग धारा मा हँइ जइउ बहे
जइ खेतिहर नेता अउ सब कुछ मुल अध्यापक ना रंच रहे ।
उप्पर ते नीचे लगु बिगरी रामइ जो चहैं बनाइ सकैं
अब रामउ भरघर कलजुग मा देखउ कब छूटी पाइ सकैं ।

उइ लरिका खाली घूमि रहे जो ईंट देस की नींव क्यार
जो हँइ माटी कै लोंदा अस ठगि रहे उनँइ हँइ रँगे स्यार ।
अँधरे भविष्य की लकुटी जो, हँइ दिया अंध की छाती कै
जो हँइ सनेह बिन कसमसाति, जो लउ हँइ टुटही बाती कै ।

उइ लरिका खाली घूमि रहे जो भुँइ के पके खजाना हँइ
हँइ जौन गुरू या कुंभकार उनते तौ भल सुलताना हँइ ।
डाकुन के काटँइ कान नित्त जो नई जमानँइ हथिआवँइ
तिगड़म की जिन्दा मूरति अस जइ लाज सरम सब ठुकरावँइ ।

मरसिया पढ़ँइ जइ विद्यालय इनके जिउ का हँइ रहे रोइ
जइ अगिली पछिली वर्तमान तीनिउ साखिन का रहे धोइ ।
जो लरिका घर घर ते चलिकै विद्या पढ़िबे बदि आवति हँइ
उइ सुरजन की गरदन कटि गइ यहु सपना निन्तइ पावति हँइ ।

आकाश धरा मा कहूँ होउ तउ आपन सर संधान करउ
अध्यापक सुधरँइ देस बनइ कुछ अइस जतन भगवान करउ ।

●

फुलमतिया का दिन भरि काम

धूरि जमी पाँयन पर मोट
पँहिदे एक जाँघिया छोट।
लीखइ चमकँइ बिनठे बार
जूरा फटी किनारी क्यार।
बनियानो मा छेद तमाम
मइली जइसे धुरहा चाम।
चट्टी कबहुँ न पाइनि गोड़
पंड़रोहे अस चुये करोड़।
जह गरीब की बिटिया जाति
माँछी पाँयिन धरि धरि खाति।

नींद भरे आँखिन मा गाढ़ि
डारिसि जानँउ कौनउ डाँढ़ि
यहिके बदि न बनैं स्कूल
अदिन गिनइ दुनियाँ करि भूल
बेरि बेरि सुड़कइ अस नाक
घर मा मंजी रहइ जस लाँक
झुके झुके लगबावइ धान
जमुहाई अउ सूख परान
जाड़ेन सिकुड़इ गोबर बीनइ
जबरदस्त यहिका श्रम छीनइ

नाक बहति पाथर भइ सूखि
भई हेंउतहरि पसुरी दूखि।
कोइला रगरे मुसकुर लाल
रहि रहि खजुरी करइ बेहाल।
थकइ खोड़हिला झौंरी लाइ
उप्पर ते घरु भरि अनखाइ।

[illegible] मिश्र [illegible]

भेदु अजब राखइ लुकवाइ
देखइ कबहुँ न पलक उठाइ।
दस पइसा का नाक म फूल
जेहिकी लाली कवि कै शूल।
सूधो लेइ न कौनउ नाम
फुलमतिया का दिनु भरि काम।
अइहै कबहुँ न प्रगति धँधाइ
मनु स्वतंत्रता केर खटाइ।

अनखा कबहुँ व पाइसि माथ
समता ममता दुअउ अनाथ।
जह उन्नति की खोलइ लाज
यहि बदि कौनउ साथ न काज।
विश्व बालिका वर्ष मनाइ
मानुष खुद का रहा हँसाइ।
दुखी जगत का यहु अँधियार
जानइ कब पइहै भिनसार।

कवि की कलम न अब लिखि पइहै

लुजगुन आँसू - गीत मरघटी
कवि की कलम न अब लिखि पइहै ।

एक ओर कश्मीर जरि रहा दोहरे शासन की मारन ते
भामि लिखति पंजाब देस की लपटन ते अरु अंगारन ते
भेदु डारि एकता देह का रोजुइ भाषा काटि रही है
सम्प्रदाय की जह परिपाटी भाई भाई बाँटि रही है ।

जब लौं खतम न होलि देखइहैं
सुलगति कुरुक्षेत्र जइ सारे
तब लौ भोग कामिनी कचन
कवि की कलम न अब लिखि पइहै ।

जो हमारि जह चाह कलिन घर पीर न फटकइ आँच न आवै
जो हमारि जह चाह रकत की कौनउ होरी खेलि न पावै
जो हमारि जह चाह कि भारत वहै कबुत्तर फेरि उड़ावै
जो हमारि जह चाह कि अदिमी ओंठन पर मुसकान सजावै

जिअति रहँइ जो चाहति आपन
हीरा उगिलति सपन कुँआरे
तउ जह हंसी मसखरी कविता
कवि की कलम न अब लिखि पइहै ।

जब डोली का ढोवइ वाले हँइ दुलहिन पर घात लगाये
मछरी-कुरसी के चिन्तन मा सरम धरम आदर्श चबाये
बहू जरंइ दस बीस देस मा नित रोवंइ अखबार बिचारे
आमी आजु तलक ना पाइनि परे अकहुला राम सहारे

यहि भारत का जोरइ वाले
जब लौं सफल न हुइहैं नारे
निरमानन का छाँड़ि न तब लौ
कवि की कलम न अब लिखि पइहै।

अइयाशी काहिली ओढ़ि कै हम यहु देस गुलाम बनायेन
पहिदि न पायेन आपन जूता भोग भोगि कै राजि गँवायेन
आँखी ओंठन को बरनन करि कवि कविता को रूप सजाइनि
आपुस मा तकरारि देखि कै गोरे आये गाँठ अमाइनि

जब लौ छँटि के साफ न हुइहैं
जातिवाद के बादर कारे
रीतिकाल अस ठकुरसोहाती
कवि की कलम न अब लिखि पइहैं।

पण्डित का उल्टा समझाउति मुल्लन का भड़काउति देखेन
बनी रहइ उनकी बपदाई यहि बदि आगि लगाउति देखेन
फूट डारि के राजि करइ की फिरि योजना रही बनि भैया
स्वारथ के सब पाठ सिखउने उइ ग्वाला हम लगनी गइया।

मरिहैं सिक्ख न हिन्दू मरिहैं
मरिहैं जइ इन्सान बिचारे
छाँड़ि खोरहा सुघर यथारथ
कवि की कलम न अब लिखि पइहैं।

जब लौं जानि न पाइत्ति हन यहु कविता ते रोटी ना मिलिहै
जब लौं जानि न पाइत्ति हन हम कविता बिना सुमन ना लिखिहै
कविता जीवन पंथु बतइहै आँधी का प्रायल पहिदइहै
जो कमाइ की खातिर अइहै वहु कविता की छाँह न पइहै।

जब लौं लौटि न आइत्ति हन हम
अपने आँगन अपन दुआरे
लचर सबद घुँघरुन की रुनझुन
कवि की कलम न अब लिखि पइहै।



राम मिश्र

लड़े जाति से जाति

जब कुर्सी की दौर मा हारि गये कुछ लोग
सासन बदला देस का बदलि गये रस भोग
बदलि गये रस भोग अनगिनत पाथर लगिगे
खुद भे मालामाल भाग पुरिखन के जगिगे।
त्याग ! फंसेउ तुम कहाँ घोर कलजुग मा आयेउ
शोषण की गंगा मा गोता अफरि लगायेउ।

होम मिनिस्ट्री ते चला अल्लड़ पुलिस सुधार
आयोजक की नाव का बना सबल पतवार
बना सबल पतवार बढी ओतनी हैरानी
एकादसा नित होइ नित्त लौटइ बेइमानी
उड़ी प्रगति की हंसी नहरि दफतर मा रहि गइ
राजनीति की राह योजना गैंतल बहि गइ।

उप्पर उप्पर एकता भीतर जहरु तमाम
तपसी भेसु बनाइ के करें लूट का काम
जनता का हुसियार करि कहैं चोर ते वाह
इन नेतन की चाल मा हुइहै देस तबाह।
का हिन्दू अउ सिक्ख सबै मिलि लड़िहैं भैया
स्वतंत्रता की लासि खोदि कै गड़िहैं भैया।

सिया और सुन्नी लड़इ लड़ें जाति तें जाति
रोटी कुरसी जेब बदि जोरें फिरइं जमाति
जहं देखइं सदभाउ कबिउ मिलि आगि लगावैं
छानइं बेमलि शराब भीड़ का नित भड़कावैं।
मठाधीश निज पंथ के बने रहइं यहि हेतु
जेतने निरखइं बनति कहुं खोदि गिरावैं सेतु

उत्तर प्रदेश के जड़ मन्दिर

उत्तर प्रदेश के जड़ मन्दिर स्वारथ के मुँह का भये कौर
पइठ हँइ देउता मन्दिर मा इनका ना सूझा कहूँ ठौर
टुटही मठिया के चारिउ तन जो अइली फइली जगह परी
बहुरँइ घूरेउ के दिन जग मा बहि तलिया की किसमति बहुरी।

कौनउ संडास खुला छाँड़े कोउ रहा बहाइ पनारा हइ
छोटी अउ बड़ि दुइ संकन का मैदानुँइ बना सहारा हइ
कुछ धनपतिया कइ दिहिनि आँखि बनिगे कमरा दुइ चारि बड़े
तब बनी कमेटी कुछ असिली कुछ नकली मेम्बर गये गढ़े।

अपना का सदा जनाबइ बदि श्रम कीरति की मजदूरी हइ
बिन पइसा कौनउ काम न हइ फिरि चन्दा की मजबूरी हइ
सरपट मा बनइ देवाल लगी चौगिरदा झगड़ा होइ लाग
परमारथ पूजा धरे रहे जब स्वारथ तगड़ा होइ लाग।

कौनउ लाठी लइ निकसि परा तब पुलिस पिआदे नेउते गे
झगड़ा मंजिल अउ राह बना मन्दिर कै भाजि सिहउते गे
सब कहँइ कि तुमरे बापइ की परबन्धक आँसुन रोइ रहा
बाह्मन देउता सबते आगे धीरजु हइ धीरजु खोइ रहा।

राखे गे एक पुजारी जी देखइ मा सबका गाइ लगे
मन्दिर मा आपनि राजि जानि उइ करइ नित्त नौताइ लगे।
बाई झारँ जन्तुर बाँधँ मारण उच्चाटन करँ लाग
जनु जिअइ जिआये ते उनके उनके मारे ते मरँ लाग।

काहू पर आवँइ बरम देव काहू का औघड़ दाबि रहा
काहू पर खेलि रही देबी कोउ अदिन देखि नित खाबि रहा
इनके फुँकतइ चिल्लाइ भजइ चाँहि जौन बिआरी हवा होइ
डाकदर बैद जब होइ फेल तउ इनकी हिकमति हवा होइ।

प्राराम मिश्र

गाथेन जस देखेन।

कुछ समुझँइ मुला पुजारी का घर के दासउ ते अधिक नीच
व्योपार केर जरिया मन्दिर बाह्मन की पातरि लटी घीच
जब साँझ होइ दुइ चारि जने रोजुइ मन्दिर मा जुरि आवँइ
सुलफा अफीम ठर्रा ताड़ी आपन पैसन ते पहुँचावँइ

जब भीतर मारइ जोर नशा तउ बातन कै विस्तार बढ़ँइ
लीला निहारि लरिका लरिकी सब भूलि पढ़ाई यहै पढ़ँइ
सब आपनि रोटिन मा उरझे केहिका टाइम जो देखि सकै
जो सुलुगि रही यहि चठिया मा को कहइ और को लेखि सकै

यहि बिध मन्दिर मा लौटि पौटि सरधा न बढ़ी व्यभिचार बढ़ा
सब धरी रही पूजा अरचा परबन्ध कमेटी लढ़म पढ़ा
लड़िकऊ पुजारी के जवान बनि काम भूत सिर आइ चढ़ा
मन्दिर की एक कोठरिया मा आखिरी गवा अध्याय पढ़ा

पाथर हइ देउता की मूरति मुल ओहिमा देउता राजि रहा
पहिले मानुष की मूरति हइ सूरति मा अनहद गाजि रहा
अध्यातम जो सिगरा जीवन तउ मूरति पूजा लरिकाईं
हइ जौन जवानी ते सुन्दर हइ सहज सबन के मन भाईं

जइसे बचपन मा गिनतिन का गोलिन ते गिनब जरूरी हइ
मूरति पूजा कुछ वहै भाँति यहि मानुष की मजबूरी हइ
मन्दिर तउ मन्दिर तब लौं हइ जब लौं न केरायेशाला हइ
धन चहैं जो करैं दुनियाँ मा यहु महजिद और शिवाला हइ

लालच मा तनिक केराये के कमरन मा कुछ जन रहै लाग
लरि झगरि जौन कुछ बना रहइ ओहिका निज स्वारथ दहै लाग
कलजुग मा कौनउ देर नहीं औरन की सम्पति हड़पइ मा
कुछ नेतागीरी अउ जमाति फिर कौन देर घरु गड़पइ मा

हंइ बेवकूफ पूँजी लगाइ आपन मकान जो बनवावंइ
हुसियार वहै जो मुफ्त रहइ उल्टा मालिक का धरिआवइ
आपन बनवावा घरु दइके बसि यहै केरावा हाथ रहा
मालिक का भई तपेदिक अस स्वासी हइ तौन अनाथ रहा

बाहेर बालेन ते रगड़ि झगाड जब कइसेउ सब कुछ बनि पावा
तब भीतर आगी बरै लाग कोऊ न बुझावै बदि आवा
परबन्ध कमेटी के ठलुहा गाँईं बाँधे बटिया पारैं
अपने घर मा बिजुरी बारैं मन्दिर के खरचा मा डारैं।

कुछ झूठी कीरति हित आपन पइसा ते मन्दिर बनवाइनि
नगई पाइ के मन्दिर मा आँसुन रोये अउ भरि पाइनि
धीरे धीरे सब जगह गयी ट्रस्टी जन का कब्जा हुइगा
देउता फाटक मा बन्द भये कुलु आदर्सन का सब धुइगा।

हम चलेन जहाँ ते हन हुँअनइं आपन पेटे मा पहुँचि गयेन
घर घाट न दोनउ पाइ सकेन धोबी कै कुत्ता अइस भयेन
हइ जह कौनउ की लागु नहीं बसि कलजुग की बलिहारी हइ
हम आँधर हन रुपिया हमार जस बाप और महतारी हइ।

जेबन मा देउता डारि फिरैं जइ ब्राह्मन सब ते आगे हुंइ
हुँइ अगर शराबी तउ आगे सबते अब यहै अभागे हुँइ
सबसे स्वतंत्र सब राजा खुद जइ जगतगुरू जइ करनधार
जइ अधरम और धरम दोनऊँ जइ अपरिहार्य जई दुर्निवार

जइ अपसर तउ आगे अपसर जई डाकू हुँई जई नेता हुँइ
जइ हुँई फकीर जई मालिक हुँई जइ ब्राह्मन विश्व विजेता हुँइ
जब बिगरा हइ सब पग पग पर अँगुरी धरि कहाँ बताई हम
भगवान अजायब घर मा हुँइ पंडन की गाथा गाई हम।

बिरबन के धोखे स्वारथ के बस्ती पर पुतरा ठाढ़े हुँइ
भइ जेतनी इनकी काट छाँट केरा अस ओतनइं बाढ़े हुँइ
जिनमा विद्यालय चलैंई हुअँउ धमकच्चरु हइ सब पइसा कै
सिगरा तलाउ यहि कलजुग मा हइ भैंसिन कै अउ भइंसा कै

यहि ते मन्दिर मा जाउ भुला ना भूलि बनौ परबन्धक तुम
नहि तौ आपनि सरधा की बदि जइ खोदि रहे हौ खन्दक तुम।

●

[illegible]राम मिश्र | गायेन जस देखेन।

चलँइ चप्पल विधानसभा मा
धन्नि कुर्सी महरानी

दारुलसफा मा बोतलईं खोलंईं
फिरि सरकारी भाषा बोलंईं।

बने यहै बेभिचार के अड्डा
भैंसि और की और को पड्डा।

अपसर माल पटाइ के लावैं
बँगलन मा मिलि बाँटि उड़ावैं।

कबहुँक जाइ के हाथ उठावैं
कबहूँ नँशा म जाइ न पावैं।

जइ जनता के प्रतिनिधि भैया
जइ ग्वाला हइ जनता गैया।

होइ जौन मन्जूर रुपइया
गिद्धन अस ताकैं लुटभइया।
करंईं दूरि गरीबी हवा मा
धन्नि कुर्सी महरानी।

कुरसी बाप और महतारी
कुरसी चोर डकैत जुआरी।

सब तिकड़म की धुरी यहै है
गरदन पर की छुरी यहै है।

यहि की खातिर सब नंगे हैं
ठेलम पेलम हुड़दंगे हैं।

सब हुइग पुस्तैनी नेता
मंत्री टिकटन के विक्रेता

कुर्सी को सब होइ आड़ मा
देस रहइ या जाइ भाड़ मा।

जह विष ते बाढ़ि दवा मा
धन्नि कुरसी महरानी।

बादसाहियत केर अखाड़ा
देस पढ़ि रहा बहै पहाड़ा।

बड़ा छोटकवन का धरि खाइ
पईसा लिहे निआउ बिकाइ।

बड़ा वहै जो जेतना जाली
साँचु कहइया केरि हलाली।

सुरसा अस महँगाई हुइ गइ
राजनीति बपदाई हुइ गइ।

कंकर पत्थर दारि मा कसकैं
नियम धरम सब रहि रहि मसकैं।

लिफ्ट लगाइनि धनपति हुइगे
सब विकास भाषण मा धुइगे।

बाँटई धन कुनबा मा
धन्नि कुरसी महरानी।

•

कुरसी काल भई

राजीव गान्धी की मृत्यु पर लिखित

जह कुरसी काल भई
अहिंसा फेरि हलाल भई।

सम्प्रदाय की राजनीति मा
खैंचतान मा अउ अनीति मा।

दुसमन भाई-भाई हुइगे
स्वारथ बँधे कसाई हुइगे।

बूचड़ खाना देस समूचा
मंत्री हुइगे लँड़ी बूचा।

केहिका केहिका नसा उतरिहो
सब बिगरा केहि भाँति सुधरिहो।

समस्या अति विकराल भई
अहिंसा फेरि हलाल भई।

अपराधन के चहबच्चा मा
देसु विदेसदन के गच्चा मा।

माटी पाछे रोटी आगे
सब हुइगें बलिदान अभागे।

मिलिगे हत्या अउ कुरबानी
गोटइ स्वारथ की मनमानी।

मठाधीश राहन ते भटके
रोटी अउ बोटी मा अटके।

बपुलिम्म दुग्ध मराल भई
अहिंसा फेरि हलाल भई।

लिट्टे कहूँ, कहूँ सिवसेना
देस भगति का किहे चबेना।

बात कहूँ हइ खालिस्तानी
घात कहूँ हइ पाकिस्तानी।

कहूँ तीन सौ सत्तर धारा
गवा भाड़ मा भाई चारा।

तिकड़म झंझट मारकाट हइ
प्रेम नेह कै मन उचाट हइ।

सफल द्रोहिन की चाल भई
अहिंसा फेरि हलाल भई।

लूट मार कै राज हियाँ हइ
नेता आतशबाज हियाँ हइ।

जाति जाति मा नई जाति हइ
संसद ठलुहन की जमाति हइ।

दुख ते कौन रहइ बग्गर मा
कुरसी छाँडि सबइ को हर मा।

पइदा हइ कौनी माटी ते
उग्रवाद हाँकइ साँटी ते।

मनुजता फिरि कंगाल भई
अहिंसा फेरि हलाल भई।

पद पर जौन करै मनमानी
चलइ मूड़ ते उप्पर पानी।

कौनउ लेइ न जुम्मेदारी
रुपिया बाप और महतारी।
रक्षक भक्षक बनि के ठाढ़े
जो उजरे उइ अउरउ गाढ़े।
रहइ महल मा दादागीरी
अक्किलि रोवइ सहइ फकीरी।
ठगी उन्नति की ढाल भई
अहिंसा फेरि हलाल भई।

●

सब गावैं एकता गीत

सब गावैं एकता गीत
भीत हियाँ कोई नही।
बड़े देस सब मिलि मिलि आवैं
मानवता को ढोल बजावैं।
भीतर-भीतर ओधर बनि के
अस्त्र शस्त्र दिन रात बनावै।
होंइ चीन अमरीका कोई
खाइ नहीं रोटी अनरोई।
मुँहु मा और पेट मा औरइ
नेह प्रेम की फसल न बौरइ।
जो जेहिका तनिकउ धरि पावइ
देइ पटकना बाज न आवइ।

नीति नियम सब किस्सा हुइग
कूटनीति के घिस्सा हुइग।

आइ गबइ सबके देसन मा
बाँधि बघनखा निज केसन मा।

सब आपुस मा भयभीत
गीत हियाँ कोई नही।

मंचन पर जब नेता बोलंइ
नित समता की घुंडी खोलंइ।

नीचे उतरैं जाति विचारैंइ
लाठी साँप दुअउ का मारैंइ।

अउरउ आगे पण्डित मुल्ला
रारि करावैं खुल्लम खुल्ला।

आपनि रोटी बेमलि चलावैं
लिफ्ट बैठि उप्पर का आवैं।

कइसेउ मिलइ मिलइ मुल गद्दी
चहैंइ होइ जह दुनियाँ रद्दी।

मछरी कै निआउ हइ जग मा
गड़े शूल हंइ सूधे पग मा।

उजरइ चहैं बसीत
गीत हियाँ कोई नाहीं।

चूल्हे चकिया के चक्कर मा
स्वारथ अनरथ की टक्कर मा।

कविता बनि छुछुआइ छछुन्दर
रीति काल फिरि मस्त कलंदर।

धरमगुरू जब जन का बाँटिनि
देस एकता समता चाटिनि।

मर ते बड़ा सुगर का मानिनि
सम्प्रदाय का श्रेष्ठ बखानिनि।
रामायन पढ़ि भाई मारिनि
लछिमन भरत दुअउ का तारिनि
राम इमाम जुगल भे नेता
दल दल मा फँसि गे अभिनेता।
बेइमानी मा आगे हाजी
पण्डित और पादरी पाजी।
करँइ पुरिखन की मट्टी पलीत
मीत हियाँ कोई नहीं।

अब कै किसान

जब तीनि बरस लगु फेल भये भइया अघाइ कक्षा दस मा
तब हारि गई हिम्मति उनकी अब रही पढ़ाई ना बस मा
संझलौखे कोइरे पर बइठे तउ ककिया ते बतुआइ चले
अब करँइ किसानी जुटि हमहूँ जिउ का नभ मा दौराइ चले।
बोले बप्पा करि करि मरि गे ना तनिकउ उन्नत करि पाइनि
दिन राति बधे अस रम्भे तउ मुल बक्खारी ना भरि पाइनि
बैलन का बेंचि लेउ ट्रकटर उठि अब वह मनौ किसानी गइ
जोतति बोउति हुइगै बेराम मम कारि खेत मा धानी भइ।
खेतइ मा खोदिनि जब कुइयाँ दुइ बिगहा सींचि उखारी भइ

वनि तीनि सटा लघु राव सबी जानउ जह उन्नति भारी भइ
यहु लरिका नवा विमुारु दिहिसि बोला अब बोरिंग करवाकउ
चौगुनी फसल कइके पइदा ललु पूर किसानी कै पावउ।

अव गाँउ सरग वनिहैं यहि बिध छपरन मा हुइहैं महल ठाढ़
खेती बनिहै ब्योपार सघन हुइहैं शहरन ते गाँउ गाढ़
करजा की फिरि दरखास एक दइ दिहिसि ग्राम सेवक कहियाँ
बोले उइ बड़ी कठिनई हइ जह दुखद कर्ज कै छमछहियाँ।

लरिका बोला तुम सेवक हौ सेवक बोला पइसा परिहैं
बिन लिहे बी०डि० ओ० साहब जी कागद पर दसखत न करिहैं
जो जोगवा धरा जुगाम्रिन तै ऊ रुपिया घर ते लइ आवा
पइसा तउ मिलिहैं तब मिलिहैं सब घर की पूँजी दइ आवा।

चढ़ि गइ जमीन सब करजा मा जो गड़ा तुपा सो सब लुटिगा
तब पाइसि इंजन दौरि धूपि जब इंजन धीरज का छुटिगा।
खुस भवा और तुरतइ बोला टाइम देखइ का घड़ी चही
जब इञ्जन चलइ केराये पर दपकइ का टार्चउ बड़ी चही।

भइ पहिलि फसल पइदा जबहें बौराइ गवा रुपिया देखिसि
जानिसि दुनियाँ का भुनका अउ खुद का एकइ रहीस लेखिसि
जो चतुर समेटइ अउ ओढइ जब होंइ पाँउ बड़ चादर ते
अरईं अउ हिकमति दुअउ थकैं मुल काम परइ जब खादर ते।

बनि गये सूट हुइगा बाबू कपड़न मा धूरि लगावइ को
हइ मलिसि क्रीम जेहि देंही मा ओहिमा चीरा लगवावइ को
जहु एक प्रवाह बहइ जीवन कहुँ रुकइ नहीं सुस्ताइ नहीं
उन्नति के पथ मा जहु मानुष चलिबे वदि कबहुँ अघाइ नहीं।

मेहनति ते जौन चोराइसि जिउ बहु करिसि किसानी भरि पावा
हइ एक मियान म कौन भला तरवारि हियाँ दुइ धरि पावा

जब भरधर साउन जलु बरसा उमडाइ चली तलिया अघाइ
जो एकरस ना राखिसि जिउ का बहु अदबदाइ हइ लम्लबाइ।

जह गाढि तपस्या तपसी की ना हँसी खेल जानउ यहिका
खपड़ी पर गाज मौसमन की अति कठिन पंथु मानउ यहिका
ढेबरी को जौन उजेरु रहइ बिजुरी पइबे मा गवा चला
सीढी कै बिना अकास छुयेन मेहनति बिन बिरबा कौन फला।

हइ फूस लपाई अस करजा यहिमा कुछ लाउ न लच्छन हइ
हइ गरम तवा की बूंद एक यहि ते को भवा अकच्छ न हइ
किस्तइ जब सबइ पछेलि गयी दिन पर दिन बढनि रहा करजा
तब भरभराइ कै बढा सूतु निकसे जनु भुंड ते देउगरजा।

खेती कै फिरि नीलामी भइ ढोलकउ गयी अउ खाल गई
लम्बी धोती मोटर साइकिल अति जीवन कै जंजाल भई
खेती मेहनति की महतारी खेती ना खाला को घरु हइ
माटी का करम पसीना हइ जो हर सवाल कै उत्तरु हइ।

●

पहिचानी गई

एकहि बार उडेलि के सागर
मानहु भुंड सिगरी रंगि डारी।
मारि गुलाल अकास भगा
अरु बादर श्याम करी पिचकारी।
बूझत हैं होरिहान ते ग्वाल
कहाँ निज ग्राम की आस विचारी।
आँखिन कोरन फागुन खेलन
भीतर खेलत कृष्ण बिहारी॥

बीचिन बीचिन ते लपटाय
बिछाय चितौनि के चादर कोरी।
देखि रहे झुकि के सब पादप
कूलन बाँहन मा जनु गोरी।
बोलि रहीं चिरिया जल के
सब लाज गुमान के बन्धन तोरी।
गोप बने जल तारक मस्त
निशाकर मोहन खेलन होरी॥

घर ते निकसी जो नवोढ़ा नई
लइ नूपुर हाथ लजानी भई।
भई अग की ढीली कमान मनो
रंगी होरी के रंग जवानी नई।
उरझे सब बार झुकी पलकें
मिलि व्यंग करे नंदरानी कई।
दइ तारी जेठानी कहैं हँसि के
पहिचानी गयी पहिचानी गयी॥

हूक बरै हमरे हिय मा
हँसि बोलि के कौनु सनेहु जतइहै।
देखिहै कौन करेजो निछोहि कें
का कबौं लौटि के यौवन अइहै।
कौनी दसा बितिहै सजना
जब नागिन राति हमैं डसि खइहै।
रोइहै परी पिचकारी कहूँ
मरो फागुन दूरि खड़ो पछितइहै॥

●

दोहे

कुत्ता बाँदर और तुम भूलि न देखउ खोरि
खिरि करइ भौंकइ तुरत यम फिरि खाइ भँभोरि
होति भोरहरे मण्डपी बादरु अगर देखाइ
दुपहर लगु आँधी रहइ और बरसि के जाइ
काटेन गिन गिन के दिवस होरी पहुँची आय
भौजी मइके चलि भजी यहु दुख कहाँ समाय
लरिका लरिकी बैस बड़ि जो बिआहु हुइ जाइ
रूप रहइ अलगइ परि रहि रहि प्रेम छछाइ
होइ नखरही भामिनी बाहेर होइ बजार
तापर पइसा गाँठ जो कबहुँ न होइ उबार।
दरवाजे ते निकरि जो खेतो सकल देखाइ
बक्खारी अहनी रहइ छिन छिन मनु हरिआइ
होइ चौतरा और जो हरिआली कै बास
चौकोना आँगन बड़ा घर वर सबै सुपास।
सम वय केरी मित्रता [illegible] समता कै [illegible]
सुभ बिआहु सम [illegible] के [illegible] [illegible]

होइ चौतरा पर बंधी जेहिके श्यामा गाइ
लरिकन का लइके नहीं कवहुं बेंद घर जाइ।
तुलसी कै जंगल जहाँ, नहीं चिलम की वानि
खाँसी खुर्रा के बिना सोवउ लम्बी तानि।
होइ नखरहो कामिनी और जो तगडी होय
उप्पर ते गुस्सैल जो तउ दुख राखौ गोय।
वड़ी कठिनता से मिलइ यहि जग मा शुभ जोग
रूप मिलइ तउ घर नही जो घर रूप न भोग।

●

हुइ जाइ पूत डिपटी तुम्हार

वाहेर फकीर रिरिआइ ठाढ हुइ जाइ पूत डिपटी तुम्हार
भीतर भूंखेन मा लरिका का हुइ आवा भुखजरुया अजार
दूधन पूतन ते फरौ नित्त यू काढ़िसि आसिर्वादु नवा
तंव लौं फेरुआ पट्टी लेहउ अस कहिसि मनौ दइ घाउ गवा
कण्णा कानै पर धरिनि हाथ जेहिमा ना लरिका ना सुनि पावै
बाँसुरी गरीवी की फिर तैं ना अव उकसैधी धुनि पावै
चिल्लाइ परा तव लौं लरिका रोटी रोटी रोटी रोटी
महतारी वोली काल्हि मिली पुतुआ चुपाउ मोट झोंटी
हम सोची का वनिहैं लरिका जव रोटिन बिना बेराम परा
कब अइहैं जोगरा मा वाली कव भेंटिहै कौनउ दुख अंधरा
यहु आसिरबादु हमारे वदि बाबा मरुथल के पानी हइ
हइ मौतउ वावा मोल हियाँ जिन्दगी तेल कै घानी हइ
चूल्हे मा आगि न दइ पायेन दुइ दौस वीति गे हुइ पहार
वावा तुमका हम का देई पायेन ना माँगे लगु उधार
यू हइ चौमासे का महिना हइ कहूँ मजूरी लागि नहीं
जलमंइ के पहिले सोइ गई जागी अव लौं हइ भागि नहीं

गायेन जस देखेन।

गाराम मिश्र

तुम पुरिखा हउ, अउ वड भगत प्रभु त यतनी अरदास करउ
यक पहरा जुरइ पिसान हमंइ अस पतझर मा मधुमास भरउ
हन बाह्मन तेहि की बदि गलानि अब लौं ना कियेन मजूरी हम
जूठे गिलास अब रहेन धोइ पायेन ना तहूँ सबूरी हम

बडकवा मजूरी करिबे वदि चौराहे पर निन होइ ठाढ
मुल आवइ ना कौनउ परोस हइ मजदूरन की भीर बाढ
यकु तौ जो जानइ यू बाह्मन दूरिय ते बाईकाट करइ
ई पडिन वड़ निकम्मा हंइ कहिके दिन बारा बाट करइ

हँसि के टारंइ ई पंडित जी दम नकआरइ ई पडित जी
मंघी मारंइ ई पंडित जी सब दुतकारंइ ई पंडित जी
भ्रगु जी कै बदला खूब मनौ कलजुग मा यू भगवान लिहिसि
सबके सबदन के बानन ते कसि बाह्मन पर संधान किहिसि

दुनिया इनका विद्वान कहइ सरकार कहइ शोषक अमीर
हमका अब जुरइ न रोटी मुल हन बाबा तुमते बड़ फकीर
सल्लाह देउ तुमहें हमका का कहि लरिका का बेलमाई
जब घर मा आटा के लाले नउ कहाँ दबाई हम पाई

मरसिया पढ़ति जइ विद्यालय को पढ़ि इनमा डिपटी बनिहैं
ना जुरिहइ टयूशन बदि पइसा ना ज्ञानु चाँदनी बनि तनिहैं
हुइहैं अच्छर ते भेंट नहीं चलिहैं पसुरी सब ढकर ढकर
बदि मीरा के जो तडपड़ाइ तुमरे न कहे मिलिहै सक्कर

कटिहै कन्ना अब कनकौआ कुछ दिन कहि कहि कै डेरवायेन
भूखेन को सोइ सका जग का असहाय भयेन अउ पछितायेन
मझिलवा खैंचि रक्सा कैसेउ पेटन कै गड़हा पाटि रहा
हम चारि वरन मा ऊँचे हने यू लिहे बडप्पन चाटि रहा

आँसू बनिकै बाहेर हुइगे अब लौटि सकी जह ताब न हुइ
रूखा सूखा बसि भरइ-पेटु डिपटी बनिबे को ख्वाब न हुइ
[illegible] कुठिया बेसि रही [illegible] बखान बदि हुवाँ रहा
[illegible] मनुमारे [illegible] हिम्मी [illegible] बदि मरद [illegible]

ससुरे कै ताना उप्पर ते दुखिया लठिन की खाइ मारु
कइसे हम बिदा कराइ सकी यहु आँसुन को दिढ़ तोरि तारु
बिटिया गरीब घर न जलमइ यहु आशिर्वाद देउ बाबा
जिअतइ आँसुन कै कफ्फन मा ना बनइ जिन्दगी पछतावा

मानइ ना जानि भेद तनिकउ जहँ निर्धनता स्वच्छन्द रहइ
डाहइ मनका, यहि बदि कौनउ धरती की राह न बन्द रहइ
कौनउ गरीब की जाति नहीं यहु बे मकान अउ बे जुबान
हइ घृणा दलिद्दर बाँटि रही अकुताइ रहा भारत महान

संसद मा बाह्मन हइ शोषक बाह्मन समाज को नासि किहिसि
बाह्मन बोरिसि तारसि बाह्मन, बाह्मन अपने का लासि किहिसि
यू राजनीति का दाँउ पेच यह है कुरसी की बलिहारी
यू छाइ रहा बाह्मन बटिया बाबा से बोली महतारी

मुरली वाले का यह बाह्मन भगवान बनाइसि गुन गाइसि
ठाकुर जी का करि विश्वनाथ घर घर कै उर मा बैठाइसि
मुल जह कलजुग कै बलिहारी हइ खाइ रहा सबकी गारी
जो संग जनम से मौत तलकु ओहिका नफरत कै अगयारी।

कमजोर अंग की मददि करौ मुल सबल पुष्ट का काटउ ना
ना और करउ गहिरी खाईं हे करनधार जो पाटउ ना
जब लौं समान सब ना हुइहै भारत कै सावधान महियाँ
तब लौं जह रहिहै जाति पाँति अउ आरक्षण कै घमछहियाँ।

हिन्दी दिल हइ अउ गुरदा हइ

जनतंत्र क्यात का ब्वाखा हइ जो नहीं अपनि हिन्दी भाषा
बिन जर के कौन भला बिरवा जो बीज नहीं तउ का आसा
भारत के प्रानन की बानी हिन्दी जन मन कै कल्यानी
हइ यहै सभ्यता अउ संस्कृति यह धरती कै चूनर धानी

यहिमा कबीर की बानी हइ यह है अभेद का दरवाजा
हइ जोग्य देस की भाषा यदि सब सीखि सकंइ रानी राजा
बलु कइके ना रोकउ यहिका भाषा हइ गंगा कै धारा
सब बिधि पूरे अच्छर यहि के यह गौरव हइ यह उजियारा

हितु चहौ देस का तउ सीखउ जिउ चहौ देश का तउ सीखउ
जो ज्ञान चहति हौ तौ सीखउ विज्ञान चहति हौ तौ सीखउ
निज स्वाभिमान बदि के सीखउ, सीखउ जेहिमा अधिकार मिलइ
संस्कृति की बड़ी लरिकिनी हइ सीखउ जेहिमा भिनसार मिलइ

तुलसी बाबा की रामइनि यहिका घर घर पहुँचाउति हइ
यह देव नदी अस पीढ़िन से पीढ़िन तक उतरति आउति हइ
अँगरेजो बहू न बनि पइहै हइ निन्त कौन मेहमान रहा
जो बोलि न पायेन निज भाषा तौ कौन देस का मान रहा।

हिन्दी के पाछे व्यक्ति नहीं ताकै सम्पूरन देस खड़ा
यहिका बोले ते बड़ा व्यक्ति यहिका बोले ते देस बड़ा
जो चाहि रहे हौ देस भक्ति तौ हिन्दी भाषा मा ब्वालउ
जो चाहि रहे अभिव्यक्ति सरल तौ हिन्दी भाषा मा ब्वालउ।

जो चाहि रहे हौ बनइ देस तौ हिन्दी भाषा मा ब्वालउ
जो चाहि रहे हौ सजइ देस तौ हिन्दी भाषा मा ब्वालउ
आपन भावन की ऊँचाई जो चाहि रहे हिन्दी ब्वालउ
सम्पूर्ण विश्व के अगुवाह जो चाहि रहे हिन्दी ब्वालउ।

रसखान सूर कै गहराई जो चाहति हौ हिन्दी ब्वालउ
जो चहौ प्रकृति की अमरा हिन्दी ब्वालउ हिन्दी ब्वालउ
जो धरम चहौ हिन्दी ब्वालउ जो भगति चहौ हिन्दी ब्वालउ
भारत की भूख मिटावइ का भलगति चाहौ हिन्दी ब्वालउ।

सन्तन की सींची हिन्दी हइ हिन्दी माथे कै बिन्दी हइ
ना बंगाली ना पंजाबी ना गुजराती ना सिन्धी हइ
भारत कै फूल पिरोइ सकइ यहु दिढ़ हिन्दी का डोरा हइ
हिन्दी के बिना अधूरा सब जीवन कै कागद कोरा हइ।

जो लिखा जाय वहु पढ़ा जाय हिन्दी कै अजब कहानी हइ
आपन सोता का पाटि कौन वहि जग मा पाइसि पानी हइ
हंइ कोसि रहे कुछ फैसन मा जो नहीं घाट के घर के हंइ
जइ अधकच्चरे लुजबुत महान ना दफ्तर कै ना हर के हंइ।

हिन्दी बिचार कै बिरवा का बौंडाइ रही दइ दइ पानी
लिपि यहि की सबसे नीकी हइ भाँखिनि हंइ ज्ञानी विज्ञानी
अपने पाँवन पर ठाढ़ रहौ यहि के बदि साधन हिन्दी हइ
हर भेद भाव का गाड़इ वदि मन का आराधन हिन्दी हइ।

कौनउ भाषा ते द्वेष नहीं सम्मान जोग्य हर भाषा हइ
मुल हिन्दी हइ विस्वास अटल पूरे भारत कै आसा हइ
अब राष्ट्र-एकता कै वितान हिन्दी के बिना न तनि पइहै
भारत का भौन समुन्नत वहु हिन्दी के बिना न बनि पइहै।

हइ भीख नहीं, हइ सहज भूख हिन्दी दिल हइ अउ गुरदा हइ
हिन्दी हमारि हइ साँस सबल हिन्दी बिन भारत मुरदा हइ।

दोहे

आवति लछिमी देखि के भूलि न फरिका देउ
औसर मा चूकउ नहीं व्यवहारिक मत लेउ
होइ दुसमनी जौन ते लरिका देउ बिगारि
सन्तति अगर कुलच्छनो कहा करइ नरवारि
जाति धरम को भेद जो राज सभा मा होय
जानउ हइ अवनति रही अपन पाँउ गड़ोय
जिगंली खटिया और घर, वस्तु मिलै ना टोय
होय पेट कै रोग नित, आयु न पूरो होय
जेहि दिन ते दुइ चन्द्रमा या लउ कटी देखाइ
होय छीन आहार जो मौत लखौ नियराइ
जौन कहउ खुलि के कहउ संकट का न डेराउ
धार कवितइ मा बड़ी मुल न रहइ बेभाउ
छिन मा सब कुछ संचरइ छिन मा सब कुछ जाइ
नर अतिसय निरुपाय मुल, सब कुछ रहा बनाइ
जातइ खन हँसि कै मिलइ अउ पाछे मुसकाय
शक्कर मा कब ते रहा, जानउ जहर मिलाय
पुरस्कार सम्मान का धरउ ताख मा गोय
पहुँचि राज दरबार मा दिहिसि कवितई रोय
घटइ जगत व्योहार जो घटइ निन्त आहार
मान घटइ निज गेह मा मनौ मरन हइ द्वार
बीड़ी कै टुकड़ा बचइ गिरा गिराबा गेह
कुछ कागद अउ लेखनी सायर तंहि सन्देह
गरब नसावइ ज्ञान का स्वारथ खोवइ मान
लछिमी तेहि ते दूरि नित जो आलस की खान



आवउ मिलि जुलि निरमान करी ।

तुइगेन स्वतत्र कुछ कइ डारो
दयाखइ जेहिया दुनिया सारी ।
भरि जाँइ अन्न ते बक्खारी
ना हँसइ बिदेसी दइ तारी ।
नित नूतन अनुसन्धान करी
आवउ मिल जुलि निरमान करी ।

जन जन का पूर निआउ मिलइ
डंठल डंठल मा कली खिलइ ।
ना घुसइ भेदु अब समता मा
सब बढँइ अधिकतम क्षमता मा ।
पथु प्रगति क्यार आसान करी
आवउ मिलि जुलि निरमान करी ।

आपनि जनसंख्या का रोंकी
जो गल्त करइ तेंहिका टोंकी ।
यहि जातिबाद के सागर का
बनि कै अगस्त छिन मा सोंकी ।
दानव बदली इन्सान करी
आवउ मिल जुलि निरमान करी ।

जगु सुखी रहइ हय सुखी रहँइ
श्रम कै देउता ना दुखी रहँइ ।
जन जन मा पनपै देस भगति
हइ निन्त एकता मा भलगति ।
अभिसापन का बरदान करी
आवउ मिलि जुलि निरमान करी ।

दइजा हइजा ना घरइ अब
दुसमन ना आँखि तरेरइ अब।
झारँइ रिसबति कै लच्छन सब
हिंसा खुलि करइ अकच्छ न अब।
ना करजा खाइ गुमान करी
आबउ मिलि जुलि निरमान करी।

●

वहै देसु हम पावैं

सहस बार जो जलमँइ भुँइ पर वहै देसु हम पावैं
नित नित होईं देवारी होरी सहर गाँउ मिलि गावैं।
सम्प्रदाय ना जहाँ बहावै व्यर्थ रकत कै धारा
दुखी गरीब पाइ के हुलसैं महलन केर सहारा।
जरै प्रेम का दीपक जल थल सब का मिलइ उजारा
फन फन पर नाचँइ नदनन्दन उमगै जिया हमारा।
जहाँ घृणा अउ द्वेष कपट छल ना मिलि पैग बढावैं
जहाँ सन्त रैदास भगति मा ढपली अपनि बजावैं।
श्रम का कातँइ चरखा सब मिलि फिरि बरगद की छइँया
लेइँ दूध की नदी हिलोरँइ घर घर लेइँ बलइँया।
बूढ़े अनुभव करँइ दुआरे लरिकन मा लरिकइयाँ
साधू सन्त मुकुति कै परबत अनुदिन चढ़इयाँ।
छहौ रितु बनि सुखद सुहावन जहाँ प्रभाउ देखावैं
जहाँ प्रगति का झंडा हिन्दू मुसलिम सिक्ख उठावैं।

खाँइ बिदुर घर सागु कन्हैया भरि आँखिन मा पानी
जूठे बेर राम आरोगँइ जहाँ कर्ण से दानी।
होइँ न रावन जइसे जेहि थल अति कामी विज्ञानी
हँसि हँसि खाँइ घास की रोटी प्रिय प्रताप से मानी।

अफसर नेता सेवक बनि कै सुख सम्पदा लुटावै
आँगन आँगन तुलसी पूजा मइया सगुन मनावै।

ऊँच नीच की जहाँ देवालै कबहुँ न माथा फोरँइ
बगुला मन न अबोनी मछरी सपनेउ मा टकटोरँइ।
बगियन के लपटू डंडा मा जंगल टाँग न जोरँइ
जहाँ न खपरे के दुइ पइसा लरिका पुरिखा बोरँइ।

बहुअन का ना जहाँ लोभ के राकस निम्न जरावै
थपकी दइ दइ जहाँ सबारे बछरा कृषक हरावै।

सहस बार जो जलमँइ भुँइ पर
वहै देसु हम पावैं।

दोहे

भज`ति भजति यहि जगत मा, मन के पाँइ पिराँइ
प्रेम बटोही राम घर तव कहुं आइ तिराँइ।

धन की इच्छा ते बड़ी जस कै इच्छा होय
इन दोनउ ते जो बचै सुखी जगत मा सोय।

रहइ प्रेम सद्‌भाउ जो, रूखा सूखा खाय
मूरख छाड़ै गेह अस, महलु बिआहन जाय।

उठि उठि मालिक द्वार ते, देखउ भीतर जाति
भूलि बिआहउ ना सुता, कुसल दिवस ना राति।

ट्वाकउ ब्वालउ भूलि मत, चलउ राति मा राह
निंदा दीद बिहाइ के, मानुष साहंसाह।

जड छिनि छिन कुतरक करइ, बनि अक्किल की खानि
ग्यानि बदि ब्वालइ सदा मुल अवसर पहिचानि।

साँचे तपसी फूल हंइ, तोरि न तोरउ ध्यान
रहति प्रदर्शन के सदा, दर्शन धुआँ समान।

गायेन् जस देखेन

भूतनाथ का मेला

साउन का महिना और परा आखिरी जौन दिन सोमवार
रितु बरखा की परि रही सुखद हइ उप्पर ते झीनी फुहार।
गोला का मेला भूतनाथ बम बम भोले गूँजा निनाद
फटि परी भीर चोगिरदा तें भूली पीरा बिसरा विषाद॥

गंगा जल की काँउरि लादे काँधे पर झोरा धरे भये
नंगे पाँयेन लमकति आवंइ उमगनि हौसनि मा भरे भये।
जेहि वार दिष्टि डारउ उंघी बसि मूड़इ मूड़ देखाइ परंइ
फतुही पहिदे, लुगी बाँधे हुइ झुंडन मा समुहाइ परंइ॥

पटिया पारे कुछ मेहरारू पाछे मनइनि के आइ रही
कौनउ लहडुन पर हुंइ बइठी मंगल अउ भजन सुनाइ रही।
कोउ लिहे कबुत्तर पिजरा मा हइ आइ रहा लड़बावै का
मझिली भौजी के संग चला कोउ हइ चुरिया पहिरावै का॥

कोउ लिहे जलेवी खाइ रहा कोउ हइ बीड़ो सुलगाइ रहा
कोउ हइ जवान तउ धक्का दइ भोजन मा आगे जाइ रहा।
सूसर सिलबट्टा अउ नपिया खुरपा हंसिया कोउ बेचि रहा
कोउ होमगाट की खाइ मार, हइ गिरह काटि के रेंछि रहा॥

कोउ लिहे पसाही के चाउर काजर औंगे हइ आँखिन मा
कोउ सेतुआ साने बइठा कहुं गिन्नाइ रहा हइ माखिन मा।
कइ रहा छोड़उती हइ कौनउ पचाइति की जोरे जमाति
कौनउ संजोग कराइ रहा, यह भूतनाथ कै करामाति॥

पूरा वहु फूलन त पटिगा हइ भूतनाथ का कुआँ जौन
सरधा अउ केतनी भगति बढ़ी यहि अचरज का अव कहै कौन
सक्कर वाली बरफी बिकाइ रचंउ खोआ का नाम नही
कोउ बेचि रहा कतरे आलू हइ हाथन का आराम नही

सकरीन क्यार सरबतु कौनउ हइ ठाढे ठाढ़े खैंचि रहा
कौनउ लरिकन पर जलबलाइ पाछे ते आग एंचि रहा
बतुआइ रहा कौनउ आपन दुख दर्द और खेती बारी
यह नई रोशनी कै किरिला बूढे बिचार की लाचारी

कोउ पान खाइ के फक्क फक्क बीड़ी मा दमै लगाइ रहा
कोउ बइठा अपनि जमात लिहे चिलमन ते लप्प उठाइ रहा
कोउ लाठी लइके गुलादार चुचुआति तेलु करिया-करिया
चिकनाइ चला अँइछे नजरा जस तवा बना घिउ की धरिया

जो लावा चूनी भूसी लगु संझलौखे तलक बिकाइ गवा
जो रहुंइ साल भरि के भूले मिलि लिहे प्रेम अधिकाइ गवा।
जो पाइसि जौन तेलु खोंसिसि, मुल सबै जलेबी डाँइ बिकाइ
कोउ लिहे नासपाती आवा शिउ भोले का कुम्हड़ा चढाइ।

कोउ जोरे भीर नचाइ रहा बन्दर आपन डमरू बजाइ
कोउ बाजीगर देखाइ रहा, हइ लरिका का नभ मा उड़ाइ।
ठौरइ जोशी पत्तरा लिहे सब भूत भविष्य बताइ रहे
कोउ रोबंइ साधुन ते ठाढ़े जिनका हुंइ बरम सताइ रहे।

पहिदे बसि एकु घोटन्ना हुंइ करिया-करिया नंगे-नंगे
हाथन मा शीशी लिहे चलंइ मिलि बोलि रहे शिउ हरि गंगे।
कोउ छूटि टिराली तै गइ जो मेहरारू आंसू ढारि रही
अज्ञानु सकल हइ बकिक झकिक घर वालेन केरि उघारि रही।।

सब मनइन की लतगोदनि ते सड़कन का पानी गवा सूखि
कोउ कहइ कि भइया भीर वहुत अबहूँ लगि पसुरी रहीं दूखि ।
कोउ ठाढ जोरि के हाथ कहइँ सब दिन याराना चलति रहइ
यहु प्रेम केर जो दिया सुघर जुग जुग लौ बाबा जलति रहइ ।।

धक्का मुक्की करि घुसि जाइ हू-हू करि झाँकै कुआँ कोउ
लिखि दिहिस नाउँ जो मठिया पर हइ भागिमान अति भवा सोउ ।
गाडी मा भरिगे भूसा अस छति पर तिलु भरि हइ साँक नहीं
मेला जवार का महाकुंभ परि पइहै यहिमा फाँक नहीं ।।

यहु भूतनाथ का मेला हइ यहिका कुछ अजब झमेला हइ
हइ भीड़ भाड़ धमकच्चरु हइ सब कुछ हइ रेलम पेला हइ ।



वहै देसु हम पावैं

संप्रदाय न जहाँ बहावैं व्यर्थ रकत कै धारा
दुखी गरीब पाइ कै हुलसैं महलन केर सहारा ।
दिया प्रेम कै ज्योति जरावैं सबका मिलै उतारा
फन फन पर नाचैं नंद नन्दन उमगै जिया हमारा ।।
जहाँ घृणा अउ द्वेष कपट छल ना अब पैग बढ़ावैं
जहाँ सन्त रविदास भगति मा ढपली अपनि बजावैं ।।

श्रम का कातैं चरखा सब मिलि फिर बरगद की छँइयाँ
लेइँ दूध को नदी हिलोरैं घर-घर लेइँ बलैयाँ ।
बूढ़े अनुभव करैं दुआरे लरिकन मा लरिकइयाँ
साधू सन्त मुकुति कै परबत अनुदिन चढैं चढइयाँ ।।
छहौ रितू बनि सुखद सुहावन जहाँ प्रभाउ देखावैं
जहाँ प्रगति का झंडा हिन्दू मुसलिम सिक्ख उठावैं ।।

खाँइ बिदुर घर सागु कन्हैया भरि आँखिन मा पानी
जूठे बेर राम आरोगँइ जहाँ कर्ण से दानी।
जहाँ न राकस रावन जइसे अति कामो बिज्ञानो
चलु रे देस जहाँ पर राजैं राणा जइसे मानी ॥

अफसर नेता सेबक बनि कै सुख सम्पदा लुटावै
आँगन आँगन तुलसी पूजा मइया सगुन मनावै ॥

ऊँच नीच कै जहाँ देबालइ अब न माथा फोरँइ
बगुला भगत न अब मछरिन का सपनेउ मा टकटोरँइ।
बगियन के लपटू डंडा मा जंगल टाँग न जोरँइ
जहाँ न खपरे के दुइ पइसा लरिका पुरिखा बोरँइ ॥

बहुअन का ना जहाँ लोभ के राकस नित्त जरावैं
जहाँ नेह ते होति सबारे बछरा कृषक हरावै।

सहस बार जो जलमँइ भुँइ पर वहै देस हम पावैं।

